

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ جَلِيلِكُمْ لِكُنْ رَسُولَ اللَّهِ خَاشِعِ النَّبِيِّينَ (سورة الأحزاب: 40)



सीरतुन नबी के मुख्तलिफ पहलू

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी

Dr. Maulana Mohammad Najeeb Qasmi



www.najeebqasmi.com

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمُ النَّبِيِّينَ
(سورة الأحزاب 40)

सीरतुन नबी के मुख्तलिफ पहलू

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब क़ासमी

www.najeebqasmi.com

All rights reserved
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं

सीरतुन नबी के मुख्तलिफ पहलू Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi

By
डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

<http://www.najeebqasmi.com/>
[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)
[Najeeb Qasmi - YouTube](#)
Skype: najeebqasmi
Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016

Address for Gratis Distribution मुफ्त मिलने का पता:
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभल, यूपी, इण्डिया (244302)

विषय-सूची

| क्र. | विषय | पेज नं |
|------|---|--------|
| 1 | प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब कासमी संभली | 5 |
| 2 | मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल कसिम नोमानी | 8 |
| 3 | मुखबंध: मौलाना मोहम्मद असरारुल हक कासमी | 9 |
| 4 | मुखबंध: प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब | 10 |
| 5 | वह नबियों रहमत लक़ब पाने वाला | 11 |
| 6 | रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत रब्बुल आलमीन की ज़बानी | 24 |
| 7 | कुरान करीम चार जगह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम (मोहम्मद) का ज़िक्र | 25 |
| 8 | कुरान करीम एक जगह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम (अहमद) का ज़िक्र | 26 |
| 9 | हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साहबे हौज़े कौसर | 27 |
| 10 | हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरुद व सलाम | 27 |
| 11 | हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान अल्लाह का फरमान है | 28 |
| 12 | हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लोगों की हिदायत की फिक्र | 29 |
| 13 | हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उसवए हसना बनी नौए इंसान के लिए | 31 |

| | | |
|----|---|-----|
| 14 | हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ | 34 |
| 15 | हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अखलाक़ | 36 |
| 16 | हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की घरेलू ज़िन्दगी | 37 |
| 17 | हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी है | 41 |
| 18 | बेमिसाल अदीब अरबी हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवामिउल कलिम (अकवाले ज़री) | 47 |
| 19 | मुख्तसर सीरते नबवी | 58 |
| 20 | नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे मुतहहरात | 63 |
| 21 | 50 से 60 साल की उम्र 'आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह किए जिनके सियासी व दीनी व इजतिमाई चंद असबाब यह हैं। | 74 |
| 22 | नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद | 77 |
| 23 | लिबासुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम | 83 |
| 24 | अमामा अमामा या टोपी पहनना नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत व आदते करीमा | 102 |
| 25 | हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान गुस्ताखी नाकाबिले बर्दाश्त | 120 |
| 26 | लेखक का परिचय | 12 |

प्रस्तावना

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कबिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क्रियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की जिम्मेदारी है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके कुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाएँ। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख्तलिफ़ तरीकों से इस जिम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की कुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क्रियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाट्स ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यूब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में छोड़े दौड़ा दिए हैं त्क़ इस

अंतरिक्ष (जगह) को एसी ताकतें पुन कर दें जो इस्लाम और मुस्लिमानों के लिए नुकसानदेह साबित हों। चूनांचे 2013 में वेबसाइट (www.najeebqasmi.com) लांच की गई, 2015 में तीन ज़बानों में दुनिया की पहली मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) और फिर दोस्तों के तक्राजा पर हाजियों के लिए तीन ज़बानों में ख़ासी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) लांच की गई। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बहुत से उलमा ने दोनों ऐपस के लिए प्रशंसापत्र लिख कर अवाम व ख्वास से दोनों ऐपस से इस्तिफादा करने की दरखास्त की। यह प्रशंसापत्र दोनों ऐपस का हिस्सा हैं। ज़माने की रफ्तार से चलते हुए कुरान व हदीस की रौशनी में मुह्तसर दीनी पैगाम ख़ुबसूरत इमेज की शकल में मुख्तलिफ सूत्रों से हज़ारों दोस्तों को पहुंच रहे हैं जो अवाम व ख्वास में काफी मक़बूलियत हासिल किए हुए हैं।

इन दोनों ऐपस (**दीने इस्लाम और हज्जे मब्रूर**) को तीन ज़बानों में लांच करने के लिये मेरे तक़रीबन 200 मज़ामीन का अंग्रेज़ी और हिन्दी में तर्जुमा करवाया गया। तर्जुमा के साथ ज़बान के माहिरीन से एडिटिंग भी कराई गई। हिन्दी के तर्जुमा में इस बात का ख्याल रखा गया कि तर्जुमा आसान ज़बान में हो ताकि हर आम व खास के लिए इस्तिफादा करना आसान हो।

अल्लाह के फज़ल व करम और उसकी तौफ़ीक़ से अब तमाम मज़ामीन के अंग्रेज़ी और हिन्दी अनुवाद को विषय के एतेबार से किताबी शकल में तरतीब दे दिया गया है ताकि इस्तिफादा आम किया जा सके, जिसके ज़रिया 14 किताबें अंग्रेज़ी में और 14 किताबें हिन्दी में तय्यार हो गई हैं। उर्दू में प्रकाशित 7 किताबों के अलावा 10 नई किताबें छपने के लिए तय्यार कर दी गई हैं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत से मुतअल्लिक

बहुत से मज़ामीन (वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला, रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत अल्लाह की ज़बानी, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखरी नबी हैं, हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवामेउल कलिम, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में मुस्ताखी नाकाबिले बर्दाशत, मुस्तसर सीरतुन नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद व पत्नियों और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लिबास) किताबी शकल (सीरतुन नबी के मुख्तलिफ पहलू) में तरतीब दिए गए हैं ताकि इस्तिफादा आम हो सके।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि इन सारी खिदमात को कुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी किसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जगहों की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारुल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रत मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी साहब (मैंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूँ कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूँ जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हुआ।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई.

(Mufti) Abul Qasim Nomani

Founder, (U.P.) Darul Uloom Deoband



مفتی: ابو القاسم نعمانی

مہتمم دارالعلوم دیوبند، الہند

PIN- 247554 (U.P.) INDIA Tel: 01336-222429, Fax: 01336-222768 E-mail: info@darululom-deoband.com

Ref. No.

Date:

باسمہ سبحانہ و تعالیٰ

جناب مولانا محمد نجیب قاسمی سنبلی تلمریض (سعودی عرب) نے دینی معلومات اور شرعی احکام کو زیادہ سے زیادہ اہل ایمان تک پہنچانے کے لئے جدید وسائل کا استعمال شروع کر کے دینی کام کرنے والوں کے لیے ایک اچھی مثال قائم فرمائی ہے۔ چنانچہ سعودی عرب سے شائع ہونے والے اردو اخبار (اردو نیوز) کے دینی کالم (روشنی) میں مختلف عنوانات پر ان کے مضامین مسلسل شائع ہوتے رہتے ہیں۔ اور سوشل میڈیا اور ویب سائٹ کے ذریعہ بھی وہ اپنا دینی پیغام زیادہ سے زیادہ لوگوں تک پہنچا رہے ہیں۔ ایک اچھا کام یہ ہوا ہے کہ زمانہ کی ضرورت کے تحت مولانا نے اپنے اہم اور منتخب مضامین کے ہندی اور انگریزی میں ترجمے کرا دیے ہیں، جو ایلیٹرو تک بک کی شکل میں جلدی لانچ ہونے والے ہیں۔

اور امید ہے کہ مستقبل میں یہ پرنٹ بک کی شکل میں بھی دستیاب ہوں گے۔ اللہ تعالیٰ مولانا قاسمی کے علوم میں برکت عطا فرمائے اور ان کی خدمات کو قبول فرمائے۔ حریطی افادات کی توہین بخشے۔

اردو دارالعلوم دیوبند

ابو القاسم نعمانی غفرلہ

مہتمم دارالعلوم دیوبند

۵۱۳۷۱۶۳

مولانا محمد اسرار الحق
Mohammad Asrarul Haque
Member of Parliament
(Lok Sabha)



TE, South Avenue, New Delhi, 110011
Ph: 811-03790046 Telefax: 811-03296314
E-mail: mhaqqasmi@gmail.com

Date: 19/03/2016

Date: 19/03/2016

تائیدات

عصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلات و وسائل کے زیرِ مہم اہناس تک پہنچانا وقت کا اہم تکلف ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی و معاشرتی اور اصلاحی تحریکوں نے اس سمت میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے سبب آج انٹرنیٹ پر دین کے حقائق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و اعیان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں غزvam یا انڈیہ انڈیا قومی صاحب کا نام سر پرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سادہ و سادہ سوال جواب دیتے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی و اصلاحی ویب سائٹ بھی چلاتے ہیں۔

انڈیہ انڈیا قومی صاحب کا قومی قلمبر رواں دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید تکنیکی سے بخوبی واقف ہونے کی وجہ سے اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد و بنا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ مصروف کی خصوصیت علوم دینی کے ساتھ علوم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، دوسری طرف دانشور و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ خالص و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی و اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عام لوگوں کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے حسین اور مبارک ہا کے مستحق ہیں۔ ان کی شب و روز کی مصروفیات و جدوجہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی و اصلاحی اور ملی کام لے اور وہ ان کے لئے کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

کلمہ



(مولانا) محمد اسرار الحق قومی

الممبر فی قومیہ (انڈیا)

صدر آل انڈیا مسلمین، ملی فاؤنڈیشن، نئی دہلی

Email: asrarulhaqqasmi@gmail.com

प्रो. अरुणकुमार दास

आयुर्वेद

PROF. AKHTARUL WASEY
Commissioner



भाषागत अल्पसंख्यकों के आयुक्त

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

भारत सरकार

Commissioner for Linguistic
Minorities in India

Ministry of Minority Affairs
Government of India

المقر

اطلاعاتی انقلاب برپا ہونے کے بعد عصرِ حاضر کی جسم کی معلومات اور تحریک کے درجہ انھوں کی دیکھ بھال میں آتی ہیں۔ اس لیے ان کے کام میں کارآمد "کوڑے" میں رہا۔" کے انقلابی شعور کو صرف حقیقت اور حبابے بلکہ اس پر ہمارا دھنچکا اور مزہ نہ مگر ہوتا ہوا ہے۔ گوگل (Google) اور وائپاڈیا (Wikipedia) یا دیگر برہمنی سوشل سائنس ایپس نے تھیل الاٹ کا دورہ کیا ہے۔ ان کے لیے نیچے دیے گئے کہ کوئی خاص مسئلہ کے تمام شعور سے متعلق ہونا چاہیے۔ لیکن اس اعلیٰ مقامی انقلاب نے ایک جدید دستور پیدا کیا ہے کہ اطلاعات کو دینی اور غیر دینی شعور کی مشافقت سے گرجا دیں گا کہ اس کے عالمی سطح پر شمل ہو جائے۔ اس کی چاقی کی اطلاع میں مسلمانوں کو بھڑکانا چاہتا ہے۔ اور انھیں مسئلہ سے کہہ کر باخبر ہونے اور شعور حاصل کرنے کے لیے اطلاع کی حدت کو ان کے شعور میں گھسیٹ کر ہوتی جا رہا ہے۔ کیونکہ وہ ملک کے دین میں اپنی اپنی غلطی میں شامل رہتی ہے اور وہ یہ کہ اس کے درجہ بڑھاتا چاہتے ہیں۔ اس لیے حقیقی شعور حاصل کرنے کے شعور ہی کے کہ ہم شعور میں ان کو اطلاع کی کوئی چیز تلاش کرنے کے لیے اور اپنے کم شعور میں شعور اور برائی میں کوئی معلومات فراہم کرنے والے شعور میں ہے شعور میں ہائیڈ کی ہر عقل لانے کے لیے اس اطلاع کی انقلاب کے جتنے بھی وسائل اور ذرائع ہیں ان کا ہر استعمال کریں۔

[illegible]

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں

ابھی عشق کے اوجوں پر بھی ہیں

اعتراف

(پروفیسر اختر الواسع)

سابقہ انگریزی اور اردو میں انگریزی کے الفاظ کے معنی اور استعمال کے بارے میں

سابقہ حصہ: شہر اسٹاک انڈیکس پر مبنی اسٹوریٹس

سہا جی انیس چورسین ہزار روپے کا دیوٹی

All rights reserved
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं

सीरतुन नबी के मुख्तलिफ पहलू Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi

By
डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

<http://www.najeebqasmi.com/>
[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)
[Najeeb Qasmi - YouTube](#)
Skype: najeebqasmi
Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016

Address for Gratis Distribution मुफ्त मिलने का पता:
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभल, यूपी, इण्डिया (244302)

अफज़ल व बुलंद मरतबा वाले हैं। अगरचे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे आखिर में नबी व रसूल बना कर भेजे गए, मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम अम्बिया व रसूल बल्कि सारी मखलूक़ात में सबसे अफज़ल व आला हैं। अब तक तमाम अम्बिया-ए-किराम व रसूल को खास ज़माना और खास लोगों के लिए भेजा गया, मगर ताजदारे मदीना हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूरी दुनिया में क़यामत तक आने वाले तमाम इंसान और जिन्नात के लिए नबी और रसूल बना कर भेजा गया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत व फज़ीलत पर बहुत कुछ लिखा और बोला गया है और जब तक दुनिया बाकी है हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अच्छे सिफ़ात बयान किए जाते रहेंगे। अल्लाह तआला की आखिरी किताब जिसे अल्लाह तआला ने 23 साल के अरसे में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बज़रिया वही नाज़िल फरमाई सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महासिन व फज़ाइल और क़मालात का एक हसीन गुल्दस्ता भी है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाके आलिया व औसाफ़े हसना का एक खूबसूरत और साफ़ शफ़ाफ़ आईना भी। क़ुरान करीम में बुह से मक़ामात पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक़रे खैर मौजूद है, कहीं आपको अल्लाह का रसूल कहा गया है, कहीं लोगों को खुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बतलाया गया है, कहीं कहा गया है कि ऐ मोहम्मद आप की रिसालत पूरी कायनात के लिए है, कहीं कहा आप आखिरी नबी हैं, कहीं फरमाया "हमने तुम्हारे सीने को खोल दिया"

और कहीं फरमया “सुबहानल लजी असरा आखिर तक” कहीं फरमाया “इन्ना आतैना कलकौसर” कहीं फरमाया “लक़द कानलकुम आखिर तक” कहीं फरमाया “इन्नल्लाह व मला इकतहू आखिर तक” गरज़ ये कि कुरान करीम में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेशुमार औसाफ बयान किए गए हैं मगर “वमा अरसलनाक आखिर तक” (सूरह अम्बिया 107) के ज़रिये अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इमतियाज़ी वस्फ़ बयान किया है। और वह है कि हमने आपको दुनिया जहां के लोगों के लिए रहमत बना कर भेजा। यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात सरापा रहमत, न सिर्फ़ उस ज़माना के लिए जिसमें आप भेजे गए और न सिर्फ़ उन लोगों के जिनके सामने आप मबऊस फरमाए गए, बल्कि क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी रहमत यानी सरापा रहमत बना कर भेजा है।

सीरतुन नबी की किताबों के मुताला से मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुफ़ारे मक्का के हाथों क्या कुछ तकलीफ़ें और अज़ियतें न बर्दाशत कीं, लेकिन कभी न किसी के लिए बददुआ फरमाई और न किसी पर नुज़ूले अज़ाब की तमन्ना की, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अज़ाब का इख़्तियार भी दिया गया तब भी रहमत व शफ़क़त की वजह से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर तकलीफ़ नज़र अंदाज की और ज़ालिमों से दरगुज़र किया, हालांकि उनका जुर्म कुछ कम न था कि वह अल्लाह के प्यारे रसूल को ईज़ा देने के गुनाह में मुबतला हुए थे,

उन पर अल्लाह तआला का अज़ाब क़हर बन कर नाज़िल होना चाहिए था, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमेशा अफ व करम से काम लिया और महज़ आपकी सिफते रहमत के बाइस वह क़हरे खुदावंदी से महफूज़ रहे।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शख्सियत सरापा रहमत है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह खुसूसियत आपकी शख्सियत के हर पहलू में बतमाम व कमाल मौजूद है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी घरेलू ज़िन्दगी में, घर से बाहर के मामलात में, अपनों और गैरों के साथ, बड़ों और बच्चों के साथ, एक नासेह मुशफ़िक् और हमदर्द व गमुस्सार की हैसियत से नुमायां नज़र आते हैं। अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रहमत से मामूर दिल अता फरमाया जो कमज़ोरों के लिए तड़प उठता था, जो मिसकीनों और यतीमों की हालते ज़ार पर गम से भर जाता था। सारे जहां का दर्द आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल में सिमट आया था। यहां तक कि रहमत का वस्फ़ आपकी तबीयते सानिया बन गया था, क्या छोटा क्या बड़ा, क्या मुसलमान क्या काफ़िर सब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रहम व करम से बहरावर रहा करते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादियों को तलाक़ दी गई, हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के अलावा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम औलाद का इंतिकाल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को बुरा भला कहा गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर घर का कूड़ा डाला गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रास्तों पर कांटे बिछाए गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके खानदान व सहाबा-ए-किराम का तकरीबन तीन साल का बाइकाट किया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तरह तरह से सताया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दांत मुबारक शहीद हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने वतने अजीज़ से निकाला गया, मगर कुर्बान जाइए उस नबी रहमत पर कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उफ तक न कहा।

बच्चों पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़क़त का नजारा क़ाबिले दीद था, मदीना की गलियों में कोई बच्चा आपको खेलता कूदता नज़र आता तो आप खुशी में उसको लिपटा लिया करते थे, उसको बोसे देते, उसके साथ हंसी मज़ाक़ करते, एक मरतबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने नवासे हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को प्यार कर रहे थे कि एक देहाती को यह मंज़र देख कर बड़ी हैरत हुई और कहने लगा कि क्या आप अपने बच्चों को प्यार करते हो, हम तो नहीं करते, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया क्या अल्लाह ने तुम्हारे दिल से रहमत का जज़्बा खत्म कर दिया है?

एक मरतबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी नवासी उमामा बिन्ते ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को उठाए हुए नमाज़ पढ़ रहे थे, जब आप सजदा में तशरीफ़ ले जाते तो उमामा को ज़मीन पर बैठा दै

और खड़े होते तो उन्हें गोद में उठा लेते। इसी तरह एक मरतब नमाज़ के दौरान बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ मुख्तसर कर दी, ताकि बच्चे को ज़्यादा तकलीफ न हो।

हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि सरकारे दो आलम सल्लललाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मैं नमाज़ की नियत बांध कर लम्बी किरात करना चाहता हूँ कि अचानक बच्चे के रोने की आवाज़ सुन कर मुख्तसर कर देता हूँ ताकि उसकी मां को परेशानी न हो।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बच्चों को बड़ी मोहब्बत से गोद में ले लिया करते थे, कभी बच्चे आप के कपड़े भी खराब कर देते लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नागवारी न होती। उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि एक मरतबा एक बच्चा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में लाया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको गोद में ले लिया तो उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कपड़ों पर पेशाब कर दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पानी मंगवाकर कपड़े पाक किए और उस बच्चे को फिर गोद में ले लिया।

फसल का नया मेवा जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आता तो सबसे कम उम्र बच्चे को जो उस वक़्त मौजूद होता अता फरमाते। गरज़ ये कि आज से चौदह सौ साल पहले रहमतुल लिल

आलमीन ने ऐसे वक़्त बच्चों को अल्लाह तआला की रहमत और आराम का ज़रिया करार दिया जब नाक उंची करने के लिए बच्चियों को ज़िन्दा दफन कर देने का रिवाज था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त उन पर तहफ़फ़ुज़ व सलामती और शफ़क़त व मोहब्बत की एक ऐसी चादर तान दी थी जब दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी बच्चियों के तहफ़फ़ुज़ व सलामती के लिए कोई क़ानून न था। रहमतुल लिल आलमीन ने बच्चों और बच्चियों को न सिर्फ़ दायमी तहफ़फ़ुज़ बख़शा बल्कि उन्हें गोद में लेकर उन्हें कंधों पर बैठा कर अपने सीने मुबारक से लगा कर उन्हें मुआशरा में ऐसा मक़ाम दिया जिसकी मिसाल दुनिया में नहीं मिलती।

बशरीयत के तकाज़े की बिना पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी रंज व गम की कैफ़ियात से गुज़रते थे और फरते गम से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखें भी छलक उठती थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साहबज़ादे हज़रत इब्राहिम रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखों से आंसू जारी हो गए। हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप रो रहे हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह रहम है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में पैदा फरमा दिया है। अल्लाह तआला अपने उन बन्दपर रहम करता है जिनके दिलों में रहम होता है।

औरतें फितरतन कमज़ोर होती हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बार बार सहाबा को तलक़ीन फरमाई कि वह औरतों के साथ नर्मी

का मामला करें, उनकी दिल जोई करें, उनकी तरफ से पेश आने वाली नागवार बातों पर सब्र का मुज़ाहरा करें। एक मरतबा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया खबदार! औरतों के साथ हुस्ने सुलूक करो, इसलिए कि यह औरतें तुम्हारी निगरानी में हैं।

एक मरतबा लड़कियों की तालीम व तरबियत के सिलसिले में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स ने किसी लड़की की सही सरपरस्ती और उसकी अच्छी तरबियत की तो यह लड़की क़यामत के दिन उसके लिए दोज़ख की आग से रुकावट बन जाएगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद अपने तर्ज़ अमल से सहाबा-ए-किराम के सामने औरतों के साथ हुस्ने सुलूक की आला मिसालें कायम कीं, एक मरतबा उम्मुल मोमेनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा ऊंटनी पर सवार होने लगीं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सवारी के पास बैठ गए और हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा आपके घुटनों के ऊपर पांव रख कर ऊंटनी पर सवार हुईं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लख्ते जिगर हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा तशरीफ लातीं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत खुश होते और उन्हें अपने साथ बैठा कर उनका बहुत एहतेराम करते।

एक मरतबा औरतों ने इजतिमाई तौर पर हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि मर्द को आप से इस्तिफादा का खूब मौका मिलता है, हम औरतें महरूम रह जाती हैं, आप हमारे लिए कोई खास दिन और वक़्त मुतअय्यन फरमा दें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी दरखास्त क़बूल फरमाई और उनके लिए एक दिन मुतअय्यन फरमा दिया। उस दिन आप औरतों के इजतिमा में तशरीफ ले जाते और उनको वाज़ व नसीहत फरमाते। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बेवाओं से निकाह करके दुनिया को यह पैग़ाम दिया कि बेवाओं को तन्हा न छोड़ो बल्कि उन्हें भी अपने मुआशरा में इज़्ज़त दो।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खादिमों और नौकरों का भी बड़ा खयाल था चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि यह खादिम तुम्हारे भाई हैं, इन्हें अल्लाह तआला तुम्हारा मातहत बना दिया है, अगर किसी का भाई उसका मातहत बन जाए तो उसे अपने खाने में से कुछ खिलाए, उसको ऐसा लिबास पहनाए जैसा वह खुद पनता है, उसकी ताक़त व हिम्मत से ज़्यादा काम न ले, अगर कभी कोई सख़्त काम ले तो उसके साथ तआवुन (मदद) भी करे। इसी तरह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अगर तुम्हारा नौकर तुम्हारे लिए खाना बना कर लाए तो उसे अपने साथ बैठा कर खिलाओ, उस खाने में से उसे कुछ दे दो। इसलिए कि आग की तपिश और धुएं की तकलीफ तो उसने बरदाशत की है।

यतीमों के लिए भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल में बड़ी हमदर्दी थीं, इसलिए आप सहाबा को यतीमों की क़िफ़ालत करने पर उकसाया करते थे। एक मरतबा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैं और यतीम की क़िफ़ालत करने वाला दोनों जन्नत में इस तरह होंगे, आपने क़ुरबत बयान करने के लिए बीच और शहादत की उंगली से इशारा फरमाया। यानी यतीम की क़िफ़ालत करने वाला हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जन्नत में होगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रमहत का दायरा सिर्फ़ इंसानों तक महूद न था बल्कि बेज़बान जानवर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रमहत से फायदा हासिल करते थे। अहादीस शरीफ में है कि एक मरतबा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी अंसारी सहाबी के बाग में तशरीफ ले गए, वहां एक ऊंट मौजूद था, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख कर ऊंट की आंखों से आंसू बहने लगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह मंज़र देख उस ऊंट के पास तशरीफ ले गए, उसके बदन पर हाथ फेरा, यहां तक कि ऊंट पूरसुकून हो गया। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दरयाफ्त किया ऊंट किस का है? एक अंसारी नौजवान ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फरमाया कि क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते जिसने तुम्हें इस जानवर का मालिक बनाया है। इसने मुझसे तुम्हारी शिकायत की है कि तुम इसे भूखा रखते हो और इससे ज़्यादा काम लेते हो।

एक मरतबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने हर चीज़ के साथ हुस्ने सुलूक का हुकुम दिया है। अगर तुम ज़बह करो तो अच्छे तरीके पर ज़बह करो, ज़बह करने से पहले अपनी छुरी तेज़ कर लिया करो, ताकि जानवर को ज़्यादा तकलीफ न हो।

बेज़बान चीज़ें भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दायरए रहमत में शामिल थीं, सीरत की किताबों में एक हैरत अंगेज वाक्या मौजूद है जिससे पता चलता है कि बेज़बान चीज़ों से भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कितना तअल्लुक था। मस्जिदे नबवी में जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुतबा देते देते थक जाते तो एक सुतून से टेक लगा लिया करते थे। बाद में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए मिम्बर तैयार कर दिया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस पर तशरीफ रखने लगे। ज़ाहिर है कि वह सुतून आपके जिस्मे अतहर के छूने से महरूम हो गया। उस बेज़बान सुतून को इस वाक्या से इस क़दर सदमा पहुंचा कि वह तड़प उठा यहां तक कि उसके रोने की आवाज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी सुनी और सहाबा-ए-किराम के कानों तक भी पहुंची। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर से उतर कर सुतून के पास तशरीफ ले गए और उसपर दस्ते शफ़क़त रख कर उसको पुरसकून किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा-ए-किराम से इरशाद फरमाया कि अगर मैं इसे गले न लगाता तो यह सुतून क़यामत तक इसी तरह रोता रहता।

मक्की दौर में कुरैशे मक्का ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितना सताया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके साहाबा पर कितने मज़ालिम ढाए गए यहां तक कि आपको अपना अज़ीज़ वतन भी छोड़ना पड़ा। इससे बढ़कर तकलीफ़दह वाक़या इंसान के किया हो सकता है कि वह अपने हम वतनों के जुल्म व सितम से आजिज़ आ कर अपना घर बार सब कुछ छोड़ कर दयारे ग़ैर में जा कर फ़रूक़श हो जाए। इसके बावजूद जब चंद साल बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फातेहाना मक्का में दाख़िल हुए तो इंकिसारी से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गरदन मुबारक झुकी हुई थी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक पर यह अल्फ़ाज़ थे “तुम पर आज कोई गिरिफ्त नहीं है।” हालांकि उस दिन चाहते तो अपने तमाम दुश्मनों से गिन गिन कर बदला ले सकते थे, मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इंतिकाम पर माफी को तरज़ीह दी और फरमाया “आज रहमत का दिन है।”

कुरान करीम में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रहमते कायनात का लक़ब दिया है जिसमें सारी मखलूक़ात इंसान, जिन्नात, नबातात, जमादात सभी दाख़िल हैं। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन सब चीज़ों के लिए रहमत होना इस तरह है कि तमाम कायनात की हक़ीक़ी रूह अल्लाह तआला का ज़िक्र और उसकी इबादत है, यही वजह है कि जिस वक़्त ज़मीन से यह रूह निकल जाएगी और ज़मीन पर कोई अल्लाह अल्लाह कहने वाला न रहेगा तो इन सब चीज़ों की मौत यानी क़यामत परबा हो जाएगी।

प्रस्तावना

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कबिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क्रियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की जिम्मेदारी है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके कुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाएँ। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख्तलिफ़ तरीकों से इस जिम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की कुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क्रियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाट्स ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यूब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में छोड़े दौड़ा दिए हैं त्क़ इस

रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत रब्बुल आलमीन की ज़बानी

कुरान करीम अल्लाह तआला का वह अज़ीमुशशान कलाम है जो इंसानों की हिदायत के लिए खालिके कायनात ने अपने आखिरी रसूल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फरमाया। कुरान करीम अल्लाह तआला की वह अज़ीम किताब है जिसकी हिफाज़त अल्लाह तआला ने खुद अपने ज़िम्मे ली है जैसा कि अल्लाह तआला का फैसला कुरान करीम में मौजूद है “यह ज़िक्र (यानी कुरान) हमने ही उतारा है और हम ही इसकी हिफाज़त करने वाले हैं।” (सूरह हजर 9)

कुरान करीम की सबसे पहली जो आयतें हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर गारे हिरा में नाज़िल हुईं वह सूरह अलक की इब्तिदाई आयात हैं “पढ़ो अपने उस परवरदिगार के नाम से ज़िने पैदा किया, जिसने इंसान को जमे हुए खून से पैदा किया। पढ़ो और तुम्हारा परवरदिगार सबसे ज़्यादा करीम है।” इस पहली वही के नुज़ूल के बाद तकरीबन तीन साल तक वही के नुज़ूल का सिलसिला बंद रहा। तीन साल के बाद वही फरिशता जो गारे हिरा में आया था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और सूरह मुदस्सिर की इब्तिदाई चंद आयात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फरमाई “ऐ कपड़े में लिपटने वाले उठो और लोगों को खबरदार करो और अपने परवरदिगार की तकबीर कहो, अपने कपड़ों को पाक रखो और गंदगी से किनारा कर लो।” इसके बाद हुज़ूर

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात तक वही के नुज़ूल का तदरीजी सिलसिला जारी रहा।

खालिके कायनात ने अपने हबीब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुरान करीम में आम तौर पर या अय्युन्नबी, या अय्युहररसूल, या अय्युहल मुद्दससिर और या अय्युहल मुज़्ज़म्मिल जैसे सिफात से खिताब फरमाया है, हालांकि दूसरे अम्बिया-ए-किराम को उनके नाम से भी खिताब फरमाया है। सिर्फ चार जगहों पर इसमें मुबारक मोहम्मद और एक जगह इसमें मुबारक अहमद कुरान करीम में आया है।

कुरान करीम में चार जगह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम (मोहम्मद) का ज़िक्र

“और मोहम्मद एक रसूल ही तो हैं, इनसे पहले बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं।” (सूरह आले इमरान 144)

“मुसलमानो! मोहम्मद तुम मर्द में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल हैं और तमाम नबियों में सब से आखिरी नबी हैं।” (सूरह अहज़ाब 4)

“और जो लोग ईमान ले आए हैं और उन्होंने नेक अमल किए हैं और हर उस बात को दिल से माना है जो मोहम्मद पर नाज़िल की गई है और वही हक़ है जो उनके परवादिगार की तरफ से आया है अल्लाह ने उनकी बुराईयों को माफ़ कर दिया है और उनकी हालत संवार दी है।” (सूरह मोहम्मद 2)

“मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वह काफिरों के मुकाबला में सख्त हैं और आपस में एक दूसरे के लिए रहम दिल हैं।”

(सूरह फतह 29)

कुरान करीम में एक जगह हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम (अहमद) का जिक्र

“ऐ बनू इसराईल! मैं तुम्हारे पास अल्लाह का ऐसा पैगम्बर बन कर आया हूँ कि मुझसे पहले जो तौरात (नाज़िल हुई) थी मैं इसकी तसदीक करने वाला हूँ और उस रसूल की खुशखबरी देने वाला हूँ जो मेरे बाद आएगा जिसका नाम अहमद है।” (सूरह सफ 6) मालूम हुआ कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने ज़माना ही में हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने की तसदीक़ फरमा दी थी।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने नबी को ऐसा अजीमुशान मक़ाम अता फरमाया कि कोई इंसान यहां तक कि नबी या रसूल भी इस मक़ाम तक नहीं पहुंच सकता, चुनांचे अल्लाह तआला अपने पाक कलाम में इरशाद फरमाता है “ऐ पैगम्बर! क्या हमने तुम्हारी खातिर तुम्हारा सीना खोल नहीं दिया? और हमने तुमसे तुम्हारा वह बोझ उतार दिया है जिसने तुम्हारी कमर तोड़ रखी थी और हमने तुम्हारी खातिर तुम्हारे तज़किरे को ऊंचा मक़ाम अता कर दिया।” (सूरह अशशरह 1,4) दुनिया में कोई लम्हा ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें हज़ारों मस्जिदों के मीनारों से अल्लाह की वहदानियत की शहादत के साथ हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने की शहादत हर वक़्त न दी जाती हो और

लाखों मुसलमान नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद न भेजते हों। गरज़ ये कि अल्लाह तआला के बाद सबसे ज़्यादा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम नामी इस दुनिया में लिखा, बोला, पढ़ा और सुना जाता है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साहबे हौज़े कौसर

खालिके कायनात ने सिर्फ़ दुनिया ही में नहीं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हौज़े कौसर अता फरमा कर क़यामत के रोज़ भी ऐसे बुलंद व आला मक़ाम से सरफराज फरमाया है जो सिर्फ़ और सिर्फ़ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हासिल है, अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है “ऐ पैगम्बर! यकीन जानो हमने तुम्हें कौसर अता करदी है, लिहाज़ा तुम अपने परवरदिगार (की खुशनूदी) के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो। यकीन जानो तुम्हारा दुश्मन वही है जिसकी जड़ कटी हुई है। (यानी जिसकी नसल आगे नह चलेगी)” (सूरह कौसर 1-3) कौसर जन्नत के उस हौज़ का नाम है जो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ब्ज़े में दी जाएगी और आपकी उम्मत के लोग क़यामत के दिन उससे सैराब होंगे। हौज़ पर रखे हुए बरतन आसमान के सितारों की तरह बहुत ज़्यादा होंगे।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम

अल्लाह तआला न सिर्फ़ ज़मीन बल्कि आसमानों पर भी अपने नबी को बुलंद मक़ाम से नवाज़ा है, चुनांचे अल्लाह तआला फरमाता है “अल्लाह तआला नबी पर रहमतेँ नाज़िल फरमाता है और फरिशते

नबी के लिए दुआएँ रहमत करते हैं। ऐ ईमान वालो! तुम भी नबी पर दरुद व सलाम भेजा करो।" (सूरह अहज़ाब 56) इस आयत में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस मक़ाम का बयान है जो आसमानों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हासिल है और वह यह है कि अल्लाह तआला फरिशतों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र फरमाता है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रहमतेँ भेजता है और फरिशते भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरजात की बुलंदी के लिए दुआएं करते हैं। इसके साथ अल्लाह तआला ने ज़मीन वालों को हुकुम दिया कि वह भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरुद व सलाम भेजा करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मुझ पर एक मरतबा दरुद भेजा अल्लाह तआला उसपर दस मरतबा रहमतेँ नाज़िल फरमाएगा। (मुस्लिम)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान अल्लाह का फरमान है

कैसा आलीशान मक़ाम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिला कि आपका कलाम अल्लाह तआला के हुकुम से ही होता है जैसा कि अल्लाह तआला खुद इरशाद फरमाता है "और यह अपनी ख़्वाहिश से कुछ नहीं बोलते, यह तो खालिस वही है जो उनके पास भेजी जाती है।" (सूरह नजम 3-4)

बहुत से मज़ामीन (वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला, रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत अल्लाह की ज़बानी, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखरी नबी हैं, हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवामेउल कलिम, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में मुस्ताखी नाकाबिले बर्दाशत, मुस्तसर सीरतुन नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद व पत्नियों और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लिबास) किताबी शकल (सीरतुन नबी के मुख्तलिफ पहलू) में तरतीब दिए गए हैं ताकि इस्तिफादा आम हो सके।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि इन सारी खिदमात को कुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी किसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जगहों की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारुल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रत मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी साहब (मैंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूँ कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूँ जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हुआ।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई.

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी हैं

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी होने के साथ आखिरी नबी भी हैं, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से जारी नबूवत का सिलसिला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खत्म हो गया, यानी अब कोई नई शरीअत नहीं आएगी, अल्लाह तआला का फरमान है "मुसलमानो! मोहम्मद तुम मर्द में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल हैं और तमाम नबियों में सब से आखिरी नबी हैं।" (सूरह अहज़ाब 40) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैं आखिरी नबी हूँ मेरे बाद कोई नबी पैदा नहीं होगा। (सही बुखारी व मुस्लिम)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलमी रिसालत से नवाज़ा गया

जैसा कि कुरान व हदीस की रौशनी में बयान किया गया कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी हैं, यानी आपको क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए नबी बनाया गया, गरज़ ये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलमी रिसालत से नवाज़ा गया। बहुत सी आयात में अल्लाह तआला ने आपकी आलमी रिसालत को बयान किया है, यहां सिर्फ दो आयात पेश हैं "ऐ रसूल! इनसे कहो कि ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ उस अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ जिसके क़ब्ज़े में तमाम आसमानों और ज़मीनों की सल्तनत है।" (सूरह आराफ 158) इसी तरह अल्लाह तआला फरमाता है "और ऐ पैगम्बर! हमने तुम्हें सारे ही इंसानों के

लिए ऐसा रसूल बना कर भेजा है जो खुशखबरी भी सुनाए और खबरदार भी करे।" (सूरह सबा 28)

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उसवए हसना बनी नौए इंसान के लिए

चूँकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलमी रिसालत से नवाज़ा गया है, इसलिए आपकी ज़िन्दगी क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए नमूना बनाई गई जैसा कि अल्लाह तआला बयान फरमाता है "हकीकत यह है कि तुम्हारे रसूल की ज़ात में एक बेहतरीन नमूना है हर उस शख्स के लिए जो अल्लाह से और आखिरत के दिन से उम्मीद रखता हो और कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करता हो।" (सूरह अहज़ाब 21) हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी का एक एक लम्हा क़यामत तक आने वाले इंसानों के लिए नमूना है लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों पर अमल करें। आज हम सुन्नतों पर यह कह कर अमल नहीं करते कि वह फ़र्ज़ नहीं हैं। सुन्नत का मतलब हरगिज़ यह नहीं कि हम उस पर अमल न करें बल्कि हमें अपने नबी की सुन्नतों पर कुर्बान हो जाना चाहिए, मगर अफसोस व फ़िक्र की बात है कि आज हमारे बाज़ भाई सुन्नत पर अमल करना तो दरकिनार बाज़ मरतबा सुन्नत का मज़ाक़ उड़ा जाते हैं। याद रखें कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के मुतअल्लिक़ मज़ाक़ करना इंसान की हलाक़त व बरबादी का सबब है। अल्लाह तआला ने अपने हबीब मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम सुन्नतों को आज ज़िन्दा कर रखा है,

अगर इजतिमाई तौर पर नहीं तो इंफिरादी तौर पर ज़रूर अमल हो रहा है। दाढ़ी रखना न सिर्फ हमारे नबी की सुन्नत है बल्कि नबी के अक़वाल व अफ़आल की रौशनी में पूरी उम्मत मुस्लिमा का इत्तिफ़ाक़ है कि दाढ़ी रखना ज़रूरी है, मगर आज बाज़ हमारे भाई दाढ़ी रखना तो दरकिनार बाज़ मरतबा दाढ़ी का मज़ाक़ उड़ा कर अपनी हलाक़त व बरबादी का सामान तैयार करते हैं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तिबा

अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उसवा में दोनों जगहों की कामयाबी व कामरानी पोशीदा रखी है, ख़िज़ा अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तिबा को लाज़िम करार दिया, फरमाने इलाही, "ऐ पैगम्बर! लोगों से कह दो अगर तुम अल्लाह से मोहब्बत रखते हो तो मेरी इत्तिबा करो, अल्लाह तुमसे मोहब्बत करेगा और तुम्हारी खातिर तुम्हारे गुनाह माफ़ फरमा देगा।" (सूरह आले इमरान 31) अल्लाह तआला ने कुरान करीम की सैकड़ों आयात में अपनी इताअत के साथ रसूल की इताअत का भी हुकुम दिया है। कहीं फरमाया अल्लाह और अल्लाह के रसूल की इताअत करो, और कहीं फरमाया अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो। इन सब जगहों पर अल्लाह तआला की तरफ से बन्दों से एक ही मुतालबा है कि फरमाने इलाही की तामील करो और इरशादे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत करो। गरज़ ये कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में बहुत सी जगहों पर यह बात वाज़ेह तौर पर बयान कर दी कि अल्लाह तआला की इताअत के साथ रसूल की भी इताअत ज़रूरी है और अल्लाह तआला

की इताअत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की के बेगैर मुमकिन ही नहीं है।

कुरान करीम के मुफस्सिरे अव्वल हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

अल्लाह तआला अपने पाक कलाम में फरमाता है "यह किताब हमने आपकी तरफ उतारी है कि लोगों की जानिब जो हुकुम नाज़िल फरमाया गया है आप उसे खोल खोल कर बयान कर दें, शायद कि वह गौर व फिक्र करें।" (सूरह नहल 46) इसी तरह फरमाने इलाही है "यह किताब हमने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इसलिए उतारी है ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके लिए हर उस चीज़ को वाज़ेह कर दें जिसमें वह इख़िताफ़ कर रहे हैं।" अल्लाह तआला ने इन दोनों आयात में वाज़ेह तौर पर बयान फरमा दिया कि कुरान करीम के मुफस्सिरे अव्वल हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और अल्लाह तआला की तरफ से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह ज़िम्मेदारी दी गई है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मत मुस्लिमा के सामने कुरान करीम के अहकाम व मसाइल खोल खोल कर बयान करें और हमारा यह ईमान है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अक़वाल व अफ़आल के ज़रिया कुरान करीम के अहकाम व मसाइल बयान करने की ज़िम्मेदारी बहुस्न खूबी अंजाम दी। सहाबा, ताबेईन और तबे ताबेईन के ज़रिये हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफ़आल यानी हदीसे नबवी के ज़खीरा से कुरान करीम की पहली अहम बुनियादी तफ़सीर इतिहाई काबिले एतेमाद

ज़राए से उम्मत मुस्लिमा से पहुंची है, लिहाज़ा कुरान फहमी हदीस के बेगैर मुमकिन ही नहीं है।

तारीख का सबसे लम्बा सफर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम

तारीख के सबसे लम्बे सफर (मेराज) का ज़िक्र अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में बयान फरमाया जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आसमानों की सैर कराई गई। मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा के सफर को इसरा कहते हैं। और यहाँ से जो सफर आसमानों की तरफ हुआ उसका नाम मेराज है। इस वाक्या का ज़िक्र सूरह नजम की आयात में भी है। सूरह नज्म की आयात 13-18 में वज़ाहत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (इस मौक़े पर) बड़ी बड़ी निशानियां मुलाहज़ा फरमायीं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़

अल्लाह तआला का प्यार भरा खिताब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है कि आप रात के बड़े हिस्से में नमाज़े तहज़ुद पढ़ा करें। “ऐ चादर में लिपटने वाले! रात का थोड़ा हिस्सा छोड़ कर बाकी रात में (इबादत के लिए) खड़े हो जाया करो। रात का आधा हिस्सा या आधे से कम या उससे कुछ ज़्यादा और कुरान करीम की तिलावत इतमिनान से साफ साफ करो।” (सूरह मुज़म्मिल 1-4) इसी तरह सूरह मुज़म्मिल की आखिरी आयत में अल्लाह तआला फरमाता है “ऐ पैगम्बर! तुम्हारा परवरदिगार जानता है कि तुम दो तिहाई रात के करीब और कभी आधी रात और कभी एक तिहाई रात (तहज़ुद



007/0090000/2016

007/0090000/2016

تأثرات

مصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلاء و وسائل کے ذریعہ عوام الناس تک پہنچانا وقت کا بہت بڑا مسئلہ ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی، معاشرتی اور اصلاحی تحریروں نے اس مسئلہ میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے سبب آج انٹرنیٹ پر دین کے حقائق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و اعیان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں غز پریم ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی صاحب کا نام سر پرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سادہ و سادہ لکھنا چکے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی، اصلاحی ویب سائٹ بھی چلاتے ہیں۔ ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی کا نظم و ادب اور اس کے ذریعہ اب تک تصنیف انہم موضوعات پر دستکزدین مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید تکنیکی سہولتوں، فوٹو، آڈیو، ویڈیو کے ذریعہ اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد و دینا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ موصوف کی شخصیت علوم دینی کے ساتھ علم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، تو دوسری طرف ڈاکٹر و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ خالق و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی و اصلاحی مضامین لکھ کر عوام کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے حسین اور مبارک ہا کے مستحق ہیں۔ ان کی شبہ و راز کی معروضات و جدوجہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی، اصلاحی اور علمی کام لے اور وہ اکابر دین کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

کلمہ

(مولانا) اسرار الحق قاسمی

المکمل، نوکریہ (لاہور)

صدر آل اہل حق، اہل حق، اہل حق، اہل حق

Email: asrarulhaqqasmi@gmail.com

प्रो. अरुणकुमार दास

आयुर्वेद

PROF. AKHTARUL WASEY
Commissioner



भारत में अल्पसंख्यकों के अधिकार

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

भारत सरकार

Commissioner for Linguistic
Minorities in India

Ministry of Minority Affairs
Government of India

نقد

اطلاعاتی انقلاب بڑھانے کے بعد جس طرح ہم کی معلومات اور تحریک کے درجہ انھوں کی دیکھیں شہادت میں ہیں۔ اس سے انکار
میں ہرگز نہ ہوگا۔ "کڑے میں رہا" کے لفظی معنی تھوڑے سے صرف حقیقت اور بڑے سے بڑے کھانا اور دھواں اور جڑے جڑے کھانا ہوتا ہے۔ کھان
(Google) اور ایک ویکی پیڈیا (Wikipedia) یا دیگر دوسری سوشل سائنس ایپس نے تھوڑے اوقات کا دورہ کیا اور دیکھا کہ ان کے لفظ
کے لیے کتنے قرائن حاصل کے تمام سوالات سے متعلق ہو کر رہ گئے ہیں۔ لیکن اس اعلیٰ معیار کے انقلاب نے ایک عجیب و غریب چیز کو جنم دیا ہے کہ انسانی
روشنی اور فہم تک روٹی میں حقائق سے گزر جائیں کہ اس کا مطلب کسی طرح میں شامل ہو جائے ہے اور اس چاقی کی اصطلاح اور مسائل سے
بہرہ گیری ہو جاتا ہے۔ دوسرا انھیں مسئلہ ہے کہ باوجود ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لیے اس اصطلاح کی حدت کو ان میں خاص کم ہوتا ہے
ہو جاتا ہے۔ کیونکہ وہ نیا کتب گاہ میں اپنی اپنی علمی شہادتیں دیتی ہے اور وہ بے کھواسی کے درجہ پر جاتا ہے جہاں ہیں۔ اس عجیب و غریب
عمل کے شعوری ہے کہ ہم خود اپنے آپ کو حقائق کو اپنا ہر تھوڑے سے اور اپنے تمام دیکھوں میں خاص طور پر جس کی اصطلاحات اور فہم
کرنے والے ہیں۔ مثلاً، اپنے شعور میں ہائیڈر جیٹر کا عمل کرنے کے لیے اس اصطلاح کی انقلاب کے جتنے بھی وسائل اور ذرائع ہیں ان کا
ہر استعمال کریں۔

مختصہ نقشبۃ ہے کہ اسے ایک ممتاز اور مستتر عالم حضرت امیر المومنین مولانا محمد نجیب شاہی نے جازہ بدریہ اور انصاریہ کے قاضی کے طور پر فائز کیا تھا۔
 نماز سے ہیں اور عرصہ سے ملت اسلامیہ عرب کی راہبرداری، رافضیہ میں ہر کام، شیعہ انہوں نے اس ضرورت کو کوئی ایک بار اور ایک بار بجلی اسطو
 میں کیا ہے کہ "ابن اسحاق انور" کی عبارت "انوار" اور دیگر جہازوں میں چار کا یہ کہ وہ اب وقت گزرنے کے ساتھ ساتھ سوائے کی رافضیہ اور
 خیراتوں کے کثرت سے متضامین اور یہ بات قابل ذکر کے ایک دفعہ حضرت انوار کے ساتھ قاضی کرنے پر ہے۔ جو یہ ہیں کہ انور کی کے
 مختلف یہ سلاطین پر ہیں کہ حجاز سے اور صفحہ میں کے اکثر کتب میں ان کی کوئی مضمر عام پر آیا ہے۔ یہ ہے کہ انور کو اکثر مومنانہ محمد نجیب شاہی
 صاحب کے حوالے سے اکثر ایک مضامین اور علمی قواعد سے استفادہ کرنے کا سہارا بنا رہا ہے۔ لیکن ان کے حوالوں میں انور کی چند اور جگہاں
 انور کی یہ عبارت ذکر کیا کہ میں مولانا محمد نجیب شاہی کی خدمت میں جب چتریک انشور پیش کر کے ان کے ارشاد سے ان کا کتاب میں کہ ان کی عرضیں
 مازنی میں علم میں آئے اور ان میں سے جو کچھ سے انور نے لکھا۔

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں

ابھی عشق کے اوجوں پر بھی ہیں

احمد علی
(پروفیسر انجمن اسلامیہ)

سابقہ انگریزوں کے زیرِ قیادت کھیلوں کی فیسولٹی نے آف سروس کے علاوہ
سابقہ صدر شہید اسامہ علی خان کے علاوہ چاروں سابق سپاہیوں کی بھی
سابقہ افسر جرنیلین اور دیگر افسروں کی بھی

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला

नबूवत ऐसा मन्सब है जो हर किसी को अता नहीं किया जाता है और न कोई शख्स अपनी ख्वाहिश और कोशिश से इस मन्सब पर फाएज़ हो सकता है। यह सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला का अतिय है जिसको चाहता है उसे अपने फज़ल व करम से नवाज़ता है जैसा कि अल्लाह तआला कुरान करीम में इरशाद फरमाता है। अल्लाह तआला जिसको चाहता है रसूल चुन लेता है फरिशतों में से और लोगों में से, बेशक अल्लाह तआला सुनने वाला और देखने वाला है।" (सूरह हज 75)

हम सबका यह ईमान है कि तमाम अम्बिया-ए-किराम आम लोगों के मुकाबले में बहुत ज्यादा अफज़ल व बेहतर हैं, मगर खुद अम्बिया-ए-किराम यकसां फज़ीलत के हामिल नहीं हैं, बाज़ अम्बिया-ए-किराम का दर्जा दूसरे अम्बिया-ए-किराम से बढ़ा हुआ है। अल्लाह तआला का इरशाद है "यह हज़राते अम्बिया ऐसे हैं कि हमने इनमें से बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत दी है। बाज़ इनमें वह हैं जिनसे अल्लाह तआला ने कलाम फरमाया और बाज़ इनमें से बहुत दर्जा पर सरफराज किया है।" (सूरह बकरह 253)

इस दुनिया में अल्लाह तआला ने बन्दों की हिदायत व रहनुमाई के लिए तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया-ए-किराम भेजे गए जो सब लाइके ताज़ीम और इंतिहाई फज़ीलत के हामिल हैं, मगर आखिरी नबी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे

पहला निकाह 25 साल की उम्र में हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से किया। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र निकाह के वक़्त 40 साल थी, यानी हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उम्र में 15 साल बड़ी थीं। नीज़ वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह करने से पहले दो शादियां कर चुकी थीं और उनके पहले शौहर से बच्चे भी थे। जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 50 साल हुई तो हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल हो गया। इस तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी पूरी जवानी (25 से 50 साल की उम्र) सिर्फ एक बेवा औरत हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ गुज़ार दी।

हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा जो अपने शौहर के साथ मुसलमान हुई थीं उनकी मां भी मुसलमान हो गई थीं, मां और शौहर के साथ हिजरत करके हबशा चली गईं थीं, वहां उनके शौहर का इंतिकाल हो गया। जब उनका बज़ाहिर दुनियावी सहारा न रहा तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफात के बाद नबूवत के दसवें साल उनसे निकाह कर लिया। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 50 साल और हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र 55 साल थी और यह इस्लाम में सबसे पहली बेवा औरत थीं। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिकाल के बाद तक़रीबन तीन या चार साल तक सिर्फ हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहीं, क्योंकि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुखसती निकाह के तीन या चार साल बाद मदीना में हुई। गरज़ तक़रीबन 55 साल की उम्र

तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ एक ही औरत रही और वह भी बेवा।

उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह किए। यह निकाह किसी शहवत को पूरी करने के लिए नहीं किए कि शहवत 50 से 55 साल की उम्र के बाद अचानक ज़ाहिर हो गई हो, बल्कि सियासी व दीनी व इजतिमाई असबाब को सामने रखकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह निकाह किए। अगर शहवत पूरी करने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निकाह फरमते तो कुंवारी लड़कियाँ से शादी करते, नीज़ हदीस में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी औरत से शादी नहीं की और न किसी बेटी का निकाह कराया मगर अल्लाह की तरफ से हज़रत जिबरइल अलैहिस्सलाम वही ले कर आए।

खुलासा कलाम

अल्लाह तआला ने कुरान करीम में जगह जगह अपने हबीब मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के औसाफे हमीदा बयान फरमाए हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ अपने ज़माने के लोगों के लिए बल्कि क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए हैं और नबूवत का सिलसिला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खत्म कर दिया गया है, यानी अब क़यामत तक कोई नबी नहीं आएगा, यही शरीअते मोहम्मदिया (यानी उलूमे कुरान व हदीस) कल क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए मशअले राह है। गरज़ ये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलमी रिसालत से नवाज़ा गया है। इतने अज़ीम व

और कहीं फरमया “सुबहानल लजी असरा आखिर तक” कहीं फरमाया “इन्ना आतैना कलकौसर” कहीं फरमाया “लक़द कानलकुम आखिर तक” कहीं फरमाया “इन्नल्लाह व मला इकतहू आखिर तक” गरज़ ये कि कुरान करीम में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेशुमार औसाफ बयान किए गए हैं मगर “वमा अरसलनाक आखिर तक” (सूरह अम्बिया 107) के ज़रिये अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इमतियाज़ी वस्फ बयान किया है। और वह है कि हमने आपको दुनिया जहां के लोगों के लिए रहमत बना कर भेजा। यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात सरापा रहमत, न सिर्फ उस ज़माना के लिए जिसमें आप भेजे गए और न सिर्फ उन लोगों के जिनके सामने आप मबऊस फरमाए गए, बल्कि क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी रहमत यानी सरापा रहमत बना कर भेजा है।

सीरतुन नबी की किताबों के मुताला से मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुफ़ारे मक्का के हाथों क्या कुछ तकलीफें और अज़ियतें न बर्दाशत कीं, लेकिन कभी न किसी के लिए बददुआ फरमाई और न किसी पर नुज़ूले अज़ाब की तमन्ना की, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अज़ाब का इख्तियार भी दिया गया तब भी रहमत व शफ़क़त की वजह से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर तकलीफ नज़र अंदाज की और ज़ालिमों से दरगुज़र किया, हालांकि उनका जुर्म कुछ कम न था कि वह अल्लाह के प्यारे रसूल को ईज़ा देने के गुनाह में मुबतला हुए थे,

हुजूर अकरम सललल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी है

अल्लाह तआला ने हुजूर अकरम सललल्लाहु अलैहि वसल्लम को खातमुल अम्बिया वलमुरसलीन बना कर भेजा, आप सललल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद नबूवत व रिसालत का दरवाजा हमेशा के लिए बन्द कर दिया गया, आप सललल्लाहु अलैहि वसल्लम को दीने कामिल अता किया गया, चुनांचे कयामत तक सिर्फ और सिर्फ शरीअते मोहम्मदिया (यानी कुरान व हदीस और उनसे माखूज उलूम) ही इंसानों के लिए मशअले राह हैं। हुजूर अकरम सललल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सिलसिला नबूवत व रिसालत के इखितताम की एक वाज़ेह दलील यह भी है कि आप सललल्लाहु अलैहि वसल्लम कयामत तक पूरी इंसानियत के लिए पैगम्बर बना कर भेजे गए, अल्लाह तआला ने आप सललल्लाहु अलैहि वसल्लम की आलमी रिसालत को अपने पाक कलाम में बहुत बार बयान फरमाया है, सिर्फ तीन आयात पेशे खिदमत है।

“ऐ रसूल! उनसे कहो कि ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ उस अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ जिसके कब्जे में तमाम आसमानों और ज़मीनों की सलतनत है।” (सूरह आराफ 158)

“और (ऐ पैगम्बर) हमने तुम्हें सारे ही इंसानों के लिए ऐसा रसूल बना कर भेजा है जो खुशखबरी भी सुनाए और खबरदार भी करे।” (सूरह सबा 28)

“और (ऐ पैगम्बर) हमने तुम्हें सारे जहानों के लिए रहमत ही रहमत बना कर भेजा है।” (सूरह अम्बिया 107)

मेरे दीनी भाईयों!

इब्तिदाये इस्लाम से लेकर आज तक पूरी उम्मत मुस्लिमा कुरान व हदीस की रौशनी में मुस्तफिक है कि नबूवत का सिलसिला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खत्म हो गया। तक्ररीबन चैदह सौ सालों से करोड़ों मुसलमान इस अक्रीदा पर कायम हैं। लाखों मुहद्दिसीन, मुफस्सेरीन, फुकहा व उलमा ने कुरान व हदीस की तफसीर व तशरीह करते हुए वाज़ेह फरमा दिया कि नबूवत व रिसालत का सिलसिला खत्म हो गया और अब क़यामत तक सिर्फ और सिर्फ शरीअते मोहम्मदिया ही नाफ़ीज़ रहेगी। गरज़ ये कि मुसलमानों के तमाम मकातिबे फ़िक्र, आम व खास, आलिम व जाहिल, शहरी व देहाती, मुसलमान ही नहीं बल्कि बाज़ गैर मुस्लिम हज़रात भी जानते हैं कि मुसलमानों का यह अक्रीदा है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी व रसूल हैं और अब कोई नबी या रसूल पैदा नहीं होगा। वक़्तन फवक़्तन नबूवत का दावा करने वाले पैदा होते रहते हैं, लेकिन पूरी उम्मत मुस्लिमा ने एक साथ मुद्दए नबूवत से भरपूर मुकाबला करके अपने नबी का दिफा किया और इस्लाम के परचम को बुलंद किया।

कुरान करीम की बहुत सी आयात में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आखिरी नबी होने का ज़िक्र मौजूद है, यहां तक कि हज़रत मौलाना मुफती मोहम्मद शफी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब (ख़तमे नबूवत) में तक्ररीबन एक सौ आयाते कुरानिया, 210 अहादीसे नबविया, इज़माए उम्मत और सैंकड़ों अक़वाले सहाबा और ताबेइन व अइम्मए दीन से मसअलए ख़तमे नबूवत को मुदल्लल

वसल्लम को बुरा भला कहा गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर घर का कूड़ा डाला गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रास्तों पर कांटे बिछाए गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके खानदान व सहाबा-ए-किराम का तकरीबन तीन साल का बाइकाट किया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तरह तरह से सताया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दांत मुबारक शहीद हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने वतने अजीज़ से निकाला गया, मगर कुर्बान जाइए उस नबी रहमत पर कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उफ तक न कहा।

बच्चों पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़क़त का नजारा क़ाबिले दीद था, मदीना की गलियों में कोई बच्चा आपको खेलता कूदता नज़र आता तो आप खुशी में उसको लिपटा लिया करते थे, उसको बोसे देते, उसके साथ हंसी मज़ाक़ करते, एक मरतबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने नवासे हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को प्यार कर रहे थे कि एक देहाती को यह मंज़र देख कर बड़ी हैरत हुई और कहने लगा कि क्या आप अपने बच्चों को प्यार करते हो, हम तो नहीं करते, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया क्या अल्लाह ने तुम्हारे दिल से रहमत का जज़्बा खत्म कर दिया है?

एक मरतबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी नवासी उमामा बिन्ते ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को उठाए हुए नमाज़ पढ़ रहे थे, जब आप सजदा में तशरीफ़ ले जाते तो उमामा को ज़मीन पर बैठा दै

वसल्लम क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए नबी व रसूल हैं और क़यामत तक अब कोई नबी या रसूल पैदा नहीं होगा। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी नुज़ूल के बाद शरीअते मोहम्मदिया ही पर अमल करेंगे और इसी की लोगों को दावत देंगे।

अल्लाह तआला के कलाम के साथ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादत भी देने इस्लाम का अहम हिस्सा हैं, बल्कि हम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफ़आल के बेग़ैर अल्लाह तआला के कलाम को समझ नहीं सकते हैं। अल्लाह तआला ने सैकड़ों आयात में अपनी इताअत के साथ रसूल की इहताअत का हुकुम दिया है। गरज़ ये कि कुरान करीम के साथ हदीसे नबवी शरीअते इस्लामिया का अहम माखज़ है। अहादीस के ज़खीरा में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सैकड़ों इरशादात मौजूद हैं जिनमें वज़ाहत मौजूद है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी या रसूल नहीं आएगा और यह इरशादात मुतवातिर तौर पर उम्मत के पास पहुंचे हैं, चुनांचे आयाते कुरानिया और अहादीसे नबविया की रौशनी में पूरी उम्मत मुस्लिमा का इत्तिफ़ाक़ है कि जिस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए बेग़ैर कोई इंसान मुसलमान नहीं हो सकता इसी तरह आपको आखिरी नबी तसलीम किए बेग़ैर भी इंसान मोमिन नहीं बन सकता है। हदीस की किताबों में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सैकड़ों अक़वाल ख़तमे नबूवत पर वाज़ेह तौर पर दलालत करते हैं, यहां सिर्फ़ दो अहादीस पेशे खिदमत है।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी मिसाल मुझसे पहले अम्बिया के साथ ऐसी है जैसे किसी शख्स ने घर बनाया और उसको बहुत उम्दा और आरास्ता व पैरास्ता बनाया, मगर उसके गोशा में एक ईंट की जगह तामीर से छोड़ दी, पस ब्या उसके देखने को जूक दर जूक आते हैं और खुश होते हैं और कहते जाते हैं कि यह एक ईंट भी क्यों न रख दी गई (ताकि मकान की तामीर पूरी हो जाती) चुनांचे मैंने उस जगह को भर दिया और मुझसे ही नबूवत की कमी पूरी हुई और मैं ही नबियों में आखिरी नबी हूं और मुझ पर तमाम रसूल खत्म कर दिए गए। (सही मुस्लिम, तिर्मीज़ी, नसई, मुसनद अहमद) हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मिसाल देकर खल्मे नबूवत के मसअला को रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह फरमा दिया।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया बनी इसराइल के सियासत खुद उनके अम्बिया अलैहिमुस्सलाम किया करते थे, जब किसी नबी की वफात होती थी तो अल्लाह तआला किसी दूसरे नबी को उनका खलीफा बना देता था, लेकिन मेरे बाद कोई नबी नहीं, अलबत्ता खुलफा होंगे और बहुत होंगे। (बुखारी व मुस्लिम)

कुरान व हदीस की रौशनी में खैरुल कुरून से आज तक पूरी उम्मत मुस्लिमा का इत्तिफाक है कि नबूवत व रिसालत का सिलसिला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खत्म हो गया, अब कोई नबी पैदा नहीं होगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के

आलमीन ने ऐसे वक़्त बच्चों को अल्लाह तआला की रहमत और आराम का ज़रिया करार दिया जब नाक उंची करने के लिए बच्चियों को ज़िन्दा दफन कर देने का रिवाज था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त उन पर तहफ़फ़ुज़ व सलामती और शफ़क़त व मोहब्बत की एक ऐसी चादर तान दी थी जब दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी बच्चियों के तहफ़फ़ुज़ व सलामती के लिए कोई क़ानून न था। रहमतुल लिल आलमीन ने बच्चों और बच्चियों को न सिर्फ़ दायमी तहफ़फ़ुज़ बख़शा बल्कि उन्हें गोद में लेकर उन्हें कंधों पर बैठा कर अपने सीने मुबारक से लगा कर उन्हें मुआशरा में ऐसा मक़ाम दिया जिसकी मिसाल दुनिया में नहीं मिलती।

बशरीयत के तकाज़े की बिना पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी रंज व ग़म की कैफ़ियात से गुज़रते थे और फरते ग़म से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखें भी छलक उठती थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साहबज़ादे हज़रत इब्राहिम रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखों से आंसू जारी हो गए। हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप रो रहे हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह रहम है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में पैदा फरमा दिया है। अल्लाह तआला अपने उन बन्दपर रहम करता है जिनके दिलों में रहम होता है।

औरतें फितरतन कमज़ोर होती हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बार बार सहाबा को तलक़ीन फरमाई कि वह औरतों के साथ नर्मी

बेमिसाल अदीब अरबी हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवामिउल कलिम (अकवाले ज़री)

फसाहत व बलागत के पैकर और बेमिसाल अदीबे अरब हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मुझे जवामिउल कलिम से नवाज़ा गया है। (सही बुखारी) जिसका हासिल यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छोटे से जुमले में बड़े वसी मानी को बयान करने की कुदरत रखते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेशुमार खुसूसियात में से एक अहम तरीन खुसूसियत यह भी है कि जिस वक़्त आप पर पहली वही नाज़िल हुई और आपसे पढ़ने के लिए कहा गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने “मा अना बिक़ारी” कह कर माज़रत चाही, लेकिन अल्लाह तआला की जानिब से ऐसी खासुल खास तरबियत हुई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कौल व अमल को रहती दुनिया तक उसवा बना दिया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल ज़री से फायदा उठाने वाले हज़रात बड़े बड़े अदीब व फसीह व बलीग बन कर दुनिया में चमके। आपकी ज़बाने मुबारक से निकले बाज़ जुमले रहती दुनिया तक अरबी ज़बान के मुहावरे बन गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वाज़ व नसीहत, खुतबे, दुआ और रसाइल से अरबी ज़बान को अल्फ़ाज़ के नए ज़खीरे के साथ एक मुंफरिद उसलूब भी मिला।

यह एक मोजज़ा ही तो है कि “मा अना बिक़ारी” कहने वाला शख्स कुछ ही अरसा बाद एक मौक़ा पर इरशाद फरमाता है “मैं अरब में सबसे ज़्यादा फसीह हूँ, इसकी वजह यह है कि मैं कबीला कुरैश से हूँ

और मेरी रिज़ाअत कबीला बनी साद में हुई।" (आफ़ाएक़ फी गरीबिल हदीस लिज्जमख़शरी) यह दोनों कबीले उस वक़्त अपनी ज़बान व अदब में ख़ूबसी मक़ाम रखते थे। इसी तरह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक मरतबा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया "मैं सर जमीन अरब बहुत घूम चुका हूँ, बड़े बड़े फुसहा के कलाम को सुना हूँ, लेकिन आपसे ज़्यादा फसीह किसी शख्स को नहीं पाया। आपको किसने अदब सिखाया?" हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब में इरशाद फरमाया कि "मुझ मेरे रब ने अदब सिखाया और बेहतरीन अदब से नवाजा।"

मज़क़ूरा हदीस की सनद पर उलमा ने कुछ कलाम किया है, मगर इसमें वारिद मानी व मफहूम को सबने तसलीम किया है।

गरज़ ये कि अल्लाह तआला की जानिब से फसाहत व बलागत का ऐसा मेयार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अता किया गया जिसकी नज़ीर क़यामत तक मिलना मुमकिन नहीं है और आपके अक़वाले ज़रीं इंसानियत के लिए मशअले राह हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ुतबे खास कर हज्जतुल विदा के मौक़े पर दिया गया आपका आखिरी अहम ख़ुतबा न सिर्फ़ जवामिउल कलिम में से है बल्कि हुक्के इंसानी का बुनियादी मन्शूर भी है। इस ख़ुतबा-ए-मुबारका में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आज से चैदह सौ साल पहले मुख्तसर व जामे अल्फ़ाज़ में इंसानियत के लिए ऐसे उसूल पेश किए जिनपर अमल करके आज पूरी दुनिया में अमन व अमान क़ायम किया जा सकता है।

जहां हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल ज़रीं को ख़ुसूसी अहमियत हासिल है, वहीं शरीअते इस्लामिया में इन अक़वा

एक मरतबा औरतों ने इजतिमाई तौर पर हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि मर्द को आप से इस्तिफादा का खूब मौका मिलता है, हम औरतें महरूम रह जाती हैं, आप हमारे लिए कोई खास दिन और वक़्त मुतअय्यन फरमा दें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी दरखास्त क़बूल फरमाई और उनके लिए एक दिन मुतअय्यन फरमा दिया। उस दिन आप औरतों के इजतिमा में तशरीफ ले जाते और उनको वाज़ व नसीहत फरमाते। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बेवाओं से निकाह करके दुनिया को यह पैग़ाम दिया कि बेवाओं को तन्हा न छोड़ो बल्कि उन्हें भी अपने मुआशरा में इज़्ज़त दो।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खादिमों और नौकरों का भी बड़ा खयाल था चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि यह खादिम तुम्हारे भाई हैं, इन्हें अल्लाह तआला तुम्हारा मातहत बना दिया है, अगर किसी का भाई उसका मातहत बन जाए तो उसे अपने खाने में से कुछ खिलाए, उसको ऐसा लिबास पहनाए जैसा वह खुद पनता है, उसकी ताक़त व हिम्मत से ज़्यादा काम न ले, अगर कभी कोई सख़्त काम ले तो उसके साथ तआवुन (मदद) भी करे। इसी तरह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अगर तुम्हारा नौकर तुम्हारे लिए खाना बना कर लाए तो उसे अपने साथ बैठा कर खिलाओ, उस खाने में से उसे कुछ दे दो। इसलिए कि आग की तपिश और धुएं की तकलीफ तो उसने बरदाश्त की है।

- 1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तमाम आमाल का दारोमदार नियत पर है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)
- 2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कबीरा गुनाह अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना है, वालिदैन् की नाफरमानी करना, किसी बेगुनाह को क़त्ल करना और झूटी गवाही देना है। (सही बुखारी)
- 3) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सात हलाक करने वाले गुनाह से बचो। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! वह सात बड़े गुनाह कौन से हैं (जो इंसान को हलाक करने वाले हैं)? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया शिर्क करना, जादू करना, किसी शख्स को नाहक़ क़त्ल करना, सूद खाना, यतीम के माल को हड़पना, मैदाने जंग से भागना, पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाना। (सही बुखारी व मुस्लिम)
- 4) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुनाफ़िक़ की तीन अलामतें (निशानी) हैं, झूट बोलना, वादा खिलाफी करना, अमानत में ख़यानत करना। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)
- 5) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुममें सबसे बेहतर शख्स वह है जो क़ुरान सीखे और खिखाए। (सही बुखारी)
- 6) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह के नज़दीक सब अमलों में वह अमल ज़्यादा महबूब है जो दायमी हो अगरचे थोड़ा हो। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

- 7) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैं आखिरी नबी हूं, मेरे बाद कोई नबी पैदा नहीं होगा। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)
- 8) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया पाक रहना आधा ईमान है। (सही मुस्लिम)
- 9) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह के नज़दीक सबसे महबूब जगह मस्जिदें हैं। (सही मुस्लिम)
- 10) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मुझ पर एक मरतबा दरूद भेजा अल्लाह तआला उसपर 10 मरतबा रहमतें नाज़िल फरमाएगा। (सही मुस्लिम)
- 11) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मोमिन एक बिल से दोबारा डसा नहीं जाता है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)
- 12) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया पहलवान शख्स वह नहीं जो लोगों को पछाड़ दे बल्कि पहलवान वह शख्स है जो गुस्सा के वक़्त अपने नफ़्स पर काबू रखे। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)
- 13) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुसलमान के मुसलमान पर पांच हक़ हैं। सलाम का जवाब देना, मरीज़ की अयादत करना, जनाज़ा के साथ जाना, उसकी दावत क़बूल करना, छींक का जवाब यरहमुकुमुल्लाह कह कर देना। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

एक मरतबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने हर चीज़ के साथ हुस्ने सुलूक का हुकुम दिया है। अगर तुम ज़बह करो तो अच्छे तरीके पर ज़बह करो, ज़बह करने से पहले अपनी छुरी तेज़ कर लिया करो, ताकि जानवर को ज़्यादा तकलीफ न हो।

बेज़बान चीजें भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दायरए रहमत में शामिल थीं, सीरत की किताबों में एक हैरत अंगेज वाक्या मौजूद है जिससे पता चलता है कि बेज़बान चीजों से भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कितना तअल्लुक था। मस्जिदे नबवी में जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुतबा देते देते थक जाते तो एक सुतून से टेक लगा लिया करते थे। बाद में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए मिम्बर तैयार कर दिया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस पर तशरीफ रखने लगे। ज़ाहिर है कि वह सुतून आपके जिस्मे अतहर के छूने से महरूम हो गया। उस बेज़बान सुतून को इस वाक्या से इस क़दर सदमा पहुंचा कि वह तड़प उठा यहां तक कि उसके रोने की आवाज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी सुनी और सहाबा-ए-किराम के कानों तक भी पहुंची। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर से उतर कर सुतून के पास तशरीफ ले गए और उसपर दस्ते शफ़क़त रख कर उसको पुरसकून किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा-ए-किराम से इरशाद फरमाया कि अगर मैं इसे गले न लगाता तो यह सुतून क़यामत तक इसी तरह रोता रहता।

22) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम में से वह शख्स मेरे नज़दीक ज़्यादा महबूब है जो अच्छे अखलाक वाला हो। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

23) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सद्का देने से माल में कमी नहीं आती और जो बन्दा दरगुज़र करता है अल्लाह तआला उसकी इज़्ज़त बढ़ाता है और जो बन्दा अल्लाह के लिए आजिज़ी इख्तियार करता है उसका दर्जा बुलंद करता है। (सही मुस्लिम)

24) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर कोई शख्स अपने घर वालों पर खर्च करता है तो वह भी सद्का^१ह यानी उसपर भी अजर मिलेगा। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

25) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ऐ नौजवान की जमाअत! तुम में से जो भी निकाह की इस्तिताअत रखता हो उसे निकाह कर लेना चाहिए, क्योंकि यह नज़र को नीची रखने वाला और शरमगाहों की हिफाज़त करने वाला है और जो कोई निकाह की इस्तिताअत न रखता हो उसे चाहिए कि रोज़े रखे, क्योंकि यह उसके लिए नफसानी खाहिशात में कमी का बाइस होगा। (सही बुखारी)

26) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया औरत से निकाह (आम तौर पर) चार चीज़ों की वजह से किया जाता है। उसके माल की वजह से, उसके खानदान के शर्फ की वजह से उसकी ख़ुबसूरती की वजह से और उसके दीन की वजह से। तुम दीनदार औरत से निकाह करो, अगरचे गर्द आबू हों तुम्हारे हाथ,

यानी शादी के लिए औरत में दीनदारी को ज़रूर देखना चाहिए, चाहे तुम्हें यह बात अच्छी न लगे। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

27) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हलाल वाज़ेह है, हराम वाज़ेह है। उनके दरमियान कुछ मुशतबह चीज़ें हैं जिनको बहुत सारे लोग नहीं जानते। जिस शख्स ने शुबहा वाली चीज़ों से अपने आपको बचा लिया उसने अपने दीन और इज़ज़त की हिफाज़त की और जो शख्स मुशतबा चीज़ों में पड़ेगा वह हराम चीज़ों में पड़ जाएगा उस चरवाहे की तरह जो दूसरे की चरागाह के करीब बकरियां चराता है, क्योंकि बहुत मुमकिन है कि उसका जानवर दूसरे की चरागाह से कुछ चरले। अच्छी तरह सुन लो कि हर बादशाह की एक चरागाह होती है, याद रखो कि अल्लाह की ज़मीन में अल्लह की चरागाह उसकी हराम करदा चीज़ें हैं और सुन लो कि जिस्म के अंदर एक गोशत का टुकड़ा है। जब वह संवर जाता है तो सारा जिस्म संवर जाता है और जब वह बिगड़ जाता है तो पूरा जिस्म बिगड़ जाता है, सुन लो कि यह (गोशत का टुकड़ा) दिल है। (सही बुखारी)

28) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह की कसम! मुझे तुम्हारे लिए गरीबी का खौफ नहीं है बल्कि मुझे खौफ है कि पहली क़ौमों की तरह कहीं तुम्हारे लिए दुनिया यानी माल व दौलत खोल दी जाए और तुम उसके पीछे पड़ जाओ, फिर वह माल व दौलत पहले लोगों की तरह तुम्हें हलाक कर दे। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

जब अल्लाह का ज़िक्र इन सब चीजों की रूह होना मालूम हो गया तो रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन सब चीजों के लिए रमहत होना खुद बखुद ज़ाहिर हो गया, क्योंकि इस दुनिया में क़यामत तक अल्लाह का ज़िक्र और इबादत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही की तालीमात से क़ायम है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रहमतुल लिल आलमीन होने का यह मफहूम भी लिया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो शरीअत लेकर दुनिया में तशरीफ लाए हैं वह इंसानों की भलाई और खैर खाही के लिए है। आपकी हर तालीम और शरीअते मोहम्मदिया का हर हुकुम इंसानियत के लिए बाइसे खैर है।

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला ऐसा अज़ीम मौजू है कि रहमतुल लिल आलमीन के रहम व करम और शफ़क़त पर दिन रात भी लिखा जाए तो इस मौजू का हक़ अदा नहीं किया जा सकता। अल्लाह तआला हमें अपनी बीवी, बच्चे, घर के अफ़राद और घर के बाहर लोगों के साथ वैसा ही मामला करने वाला बनाए जो रहमतुल लिल आलमीन ने अपने क़ौल व अमल से क़यामत तक आने वाले इंसानों के लिए पेश फरमाए, आमीन।

36) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया रश्क दो ही आदमियों पर हो सकता है, एक वह जिसे अल्लाह ने माल दिया और उसे माल को राहें हक में लुटाने की पूरी तौफीक मिली हुई है और दूसरा वह जिसे अल्लाह ने हिकमत दी है और वह उसके ज़रिया फैसला करता है और उसकी तालीम देता है। (सही बुखारी)

37) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मोमिन की मिसाल उनकी दोस्ती और इत्तिहाद और शफकत में बदल की तरह है। बदल में से जब किसी हिस्सों को तकलिफ होंगी है तो सारा बदल नींद न आने और बुखार आने में शरीक होता है। (सही मुस्लिम)

38) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया आपस में जुबन न रखो, हसद न करो, पीछे बुराई न करो, बल्कि अल्लाह के बन्दे और आपस में भाई बन कर रहो और किसी मुसलमान के लिये जाएज़ नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज़्यादा नाराज़ रहे। (सही बुखारी)

39) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया (सच्चा) मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान (के ज़रर) से दूसरे मुसलमान महफूज़ रहें। मुजाज़िर वह है जो उन कामों को छोड़ दे जिनसे अल्लाह ने मना किया है। (सही बुखारी)

40) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हर चीज़ में भलाई फ़र्ज़ है, लिहाज़ा जब तुम (किसी को किसान) क़त्ल करो तो अच्छी तरह क़त्ल करो और ज़बह करो तो अच्छी तरह ज़बह करो और तुम में से हर एक को अपनी छुरी तेज़ कर लेनी चाहिए और अपने जानवर को आराम देना चाहिए। (सही मुस्लिम)

खातमुन्नबिय्यीन व सैयदुल मुरसलीन हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मज़कूरा बाला इरशादात की रौशनी में हम इंशाअल्लाह बड़े बड़े गुनाह खास कर शिर्क, वालिदैन् की नाफरमानी, क़त्ले नफ़स, चुगलखोरी, जादू, सूद, जुल्म व ज़्यादती, वादा खिलाफी, अमानत में ख़यानत, क़ता रहमी, पड़सियों को तकलीफ़ पुंहाना, हराम और मुशतबा चीज़ों का इस्तेमाल, फुज़ूलखर्ची, तकब्बुर, हसद और बुग़ज़ जैसी मुहलिक बुराइयों से अपने आपको महफूज़ रखेंगे जो हमारे मुआशरे में नासूर बन गई हैं और अपने नबी की तालीमात के मुताबिक़ सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की शुम्हूदी हासिल करने के लिए नेक आमाल करेंगे और अपने अखलाक़ को बेहतर बना कर इस्तिक़्ामत के साथ दुनियावी फ़ानी ज़िन्दगी में ही उखरवी दायमी ज़िन्दगी की तैयारी करने की हर मुमकिन कोशिश करेंगे। अल्लाह तआला हमें फ़साहत व बलागत के पैकर और बेमिसाल अदीबे अरब हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवामिउल कलिम (अक़वाले ज़रीं) को समझ कर पढ़ने वाला, उनके मुताबिक़ अमल करने वाला और उनके क़ीमती पैगामात को दूसरों तक पहुंचाने वाला बनाए, आमीन।

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात तक वही के नुज़ूल का तदरीजी सिलसिला जारी रहा।

खालिके कायनात ने अपने हबीब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुरान करीम में आम तौर पर या अय्युन्नबी, या अय्युहररसूल, या अय्युहल मुद्दससिर और या अय्युहल मुज़्ज़म्मिल जैसे सिफात से खिताब फरमाया है, हालांकि दूसरे अम्बिया-ए-किराम को उनके नाम से भी खिताब फरमाया है। सिर्फ चार जगहों पर इसमें मुबारक मोहम्मद और एक जगह इसमें मुबारक अहमद कुरान करीम में आया है।

कुरान करीम में चार जगह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम (मोहम्मद) का ज़िक्र

“और मोहम्मद एक रसूल ही तो हैं, इनसे पहले बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं।” (सूरह आले इमरान 144)

“मुसलमानो! मोहम्मद तुम मर्द में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल हैं और तमाम नबियों में सब से आखिरी नबी हैं।” (सूरह अहज़ाब 4)

“और जो लोग ईमान ले आए हैं और उन्होंने नेक अमल किए हैं और हर उस बात को दिल से माना है जो मोहम्मद पर नाज़िल की गई है और वही हक़ है जो उनके परवादिगार की तरफ से आया है अल्लाह ने उनकी बुराईयों को माफ़ कर दिया है और उनकी हालत संवार दी है।” (सूरह मोहम्मद 2)

तीन साल तक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चुपके चुपके लोगों को इस्लाम की दावत देते रहे, फिर खुल्लम खुल्ला इस्लाम की दावात देने लगे।

खुल्लम खुल्ला इस्लाम की दावत देने पर मुसलमानों को बहुत ज्यादा सताया जाने लगा, 2 साल तक मुसलमानों को बहुत तकलिफें दी गईं।

मुसलमानों ने तंग आकर मक्का से चले जाने का इरादा किया, चुनांचे 5 नबूवत में सहाबा की एक जमाअत हबशा हिजरत कर गई। 6 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चाचा हमज़ा और उनके तीन दिन बाद हज़रत उमर फारूक मुसलमान हुए। (रज़ियल्लाहु अन्हुमा)

इन दोनों के ईमान लाने से पहले मुसलमान छुप छुप कर नमाज़ पढ़ा करते थे, अब खुल कर नमाज़ पढ़ने लगे।

7 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खिलाफ कुरैश ने आपस में एक अहद नामा लिखा कि कोई शख्स मुसलमानों और हाशमी कबीला के साथ लेन देन और रिश्ता नाता नहीं करेगा, इस जुल्म की वजह से मुसलमान और हाशमी कबीले के लोग तक़रीबन तीन साल तक एक पहाड़ी की खोह में बन्द रहे।

10 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा अबू तालिब और उम्मुल मोमेनीन हज़रत खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का इंतिकाल हुआ, आपको बहुत ज्यादा रंज व गम हुआ।

10 नबूवत, चचा अबू तालिब के इंतिकाल के बाद कुपफारे मक्का ने खुल कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ देनी शुरू कर दी।

10 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ताइफ जा कर लोगों के सामने इस्लाम की दावत दी, लेकिन वहां पर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत सताया गया।

11 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वाज़ व नसीहत पर मदीना के छः हज़रात मुसलमान हुए।

27 रजब 12 नबूवत, 51 साल 5 महीना की उम्र में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेराज हुई, मुसलमानों पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं।

12 नबूवत, मौसमे हज में 18 शख्स मदीना से मक्का आए, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया।

13 नबूवत, 2 औरतें और 73 मर्द मदीना से मक्का आए, उन्होंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया और उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मदीना चलने की दरखास्त की, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना हिजरत करने के लिए राज़ी हो गए।

13 नबूवत, (पहली रबीउल अव्वल) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना हिजरत फरमाने के लिए मक्का से रवाना हुए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सफ़रे हिजरत में मदीना के करीब बनू उमर बिन औफ की बस्ती कुबा में चंद रोज़ का क़याम फरमाया और मस्जिदे कुबा की बुनियाद रखी, कुबा से मदीना जाते हुए बनू सालिम बिन औफ की आबादी में पहुंच कर उस मक़ाम पर जुमा पढ़ाया जहां अब मस्जिद (मस्जिदे जुमा) बनी हुई है।

लाखों मुसलमान नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद न भेजते हों। गरज़ ये कि अल्लाह तआला के बाद सबसे ज़्यादा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम नामी इस दुनिया में लिखा, बोला, पढ़ा और सुना जाता है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साहबे हौज़े कौसर

खालिके कायनात ने सिर्फ़ दुनिया ही में नहीं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हौज़े कौसर अता फरमा कर क़यामत के रोज़ भी ऐसे बुलंद व आला मक़ाम से सरफराज फरमाया है जो सिर्फ़ और सिर्फ़ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हासिल है, अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है “ऐ पैगम्बर! यकीन जानो हमने तुम्हें कौसर अता करदी है, लिहाज़ा तुम अपने परवरदिगार (की खुशनूदी) के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो। यकीन जानो तुम्हारा दुश्मन वही है जिसकी जड़ कटी हुई है। (यानी जिसकी नसल आगे नह चलेगी)” (सूरह कौसर 1-3) कौसर जन्नत के उस हौज़ का नाम है जो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ब्ज़े में दी जाएगी और आपकी उम्मत के लोग क़यामत के दिन उससे सैराब होंगे। हौज़ पर रखे हुए बरतन आसमान के सितारों की तरह बहुत ज़्यादा होंगे।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम

अल्लाह तआला न सिर्फ़ ज़मीन बल्कि आसमानों पर भी अपने नबी को बुलंद मक़ाम से नवाज़ा है, चुनांचे अल्लाह तआला फरमाता है “अल्लाह तआला नबी पर रहमतेँ नाज़िल फरमाता है और फरिशते

9 हिजरी, हज फ़र्ज़ हुआ, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सरपरस्ती में सहाबा-ए-किराम की एक जमाअत ने हज अदा किया, हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने मैदाने हज में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुकुम से एलान किया कि अब आइन्दा कोई काफ़िर खाना काबा के अन्दर दाखिल नहीं होगा।

10 हिजरी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तक़रीबन एक लाख चैबीस हज़ार सहाबा-ए-किराम के साथ हज (हज्जतुल विदा) अदा किया।

11 हिजरी, 63 साल और पांच दिन की उम्र में 12 रबीउल अव्वल को सोमवार के रोज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दारेफानी से कूच फरमा गए।

गरज़ नबूवत के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक़रीबन 23 साल हयात से रहे, 13 साल मक्का में और 10 साल मदीना में।

गज़वात- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीना हिजरत करने के बाद दुशमनों के साथ 2 हिजरी से 9 हिजरी के दौरान आठ साल में बहुत सी जंगें हुईं जिनमें से मशहूर जंगें यह हैं: जंगे बदर 2 हिजरी, जंगे उहद 3 हिजरी, जंगे खंदक 5 हिजरी, जंगे खैबर 5 हिजरी, जंगे फतह 8 हिजरी, जंगे हुनैन 8 हिजरी, जंगे तबूक 9 हिजरी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे मुतहहरात

अज़वाजे मुतहहरात (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों) के मुतअल्लिक अल्लाह तआला अपने पाक कलाम (सूरह अहज़ाब 32) में इरशाद फरमाता है "ऐ नबी की बीवियों तुम आम औरतों की तरह नहीं हो, तुम बुलंद मक़ाम की हामिल हो। तुम्हारी एक गलती पर दो गुना अज़ाब दिया जाएगा। और इसी तरह तुम में से जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की फरमाबरदारी करेगी और नेक काम करेगी हम उसे अज़ (भी) दोहरा देंगे और उसके लिए हमने बेहतरीन रोज़ी तैयार कर रखी है।" जैसा कि सूरह अहज़ाब 30 और 31 में मज़कूर है।

कुरान करीम, रोज़े क़यामत तक के लिए लोगों से मुखातब है "ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए यह हलाल नहीं है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद उनकी अज़वाजे मुतहहरात में से किसी से निकाह करो।" (सूरह अहज़ाब 53) यानी अज़वाजे मुतहहरात (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों) तमाम ईमान वालों के लिए माँ (उम्मुल मोमिनीन) का दर्जा रखती हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह फरमाए। इनमें से सिर्फ़ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहुअन्हा कुवारी थीं, बाकी सब बेवा या मुतल्लका थीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे पहला निकाह 25 साल की उम्र में हज़रत खदीजा

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लोगों की हिदायत की फ़िक्र

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों की हिदायत की इस क़दर फ़िक्र फरमाते कि अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है "ऐ पैगम्बर! शायद तुम इस ग़म में अपनी जान हलाक किए जा रहे हो कि यह लोग ईमान (क्यूँ) नहीं लाते।" (सूरतुश शूरा 3) हमारे नबी काफ़िरों और मुशरिकों को ईमान में दाख़िल करने की दिन रात फ़िक्र फरमाते और इसके लिए हर मुमकिन कोशिश फरमाते, लेकिन आज बाज़ मुसलमान अपने ही भाइयों को उनकी बाज़ ग़लतियों की वजह से उनको काफ़िर और मुशरिक करार देने में बड़ी ज़ल्दी से काम लेते हैं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी रहमत बना कर भेजे गए

रब्बुल आलमीन ने अपने नबी को रहमतुल लिल मुस्लेमीन नहीं बनाया बल्कि रहमतुल लिल आलमीन बनाया है जैसा कि फरमाने इलाही है "ऐ पैगम्बर! हमने तुम्हें सारे ज़हानों के लिए रहमत ही रहमत बना कर भेजा है।" (सूरह अम्बिया 107) जिस नबी को सारे ज़हानों के लिए रहमत बना कर भेजा गया हो उस नबी की तालीमात में दहशत गर्दी कैसे मिल सकती है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमेशा अमन व आमान कायम करने की तालीम दी है।

सबसे पहले नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे मुतहहरात का मुख्तसर तआरुफ़

1) "उम्मुल मोमेनीन हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा" नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली बीवी हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दियानत, कमाल और बरकत को देख कर उन्होंने खुद शादी की दरखास्त की थी। निकाह के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र पचीस साल और हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र चालीस साल थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चारों बेटियाँ (ज़ैनब, रुक़ैया, उम्मे कुलसूम और फातिमा) और इब्राहिम के अलावा दो बेटे (कासिम और अब्दुल्लाह) हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ही से पैदा हुए। हज़रत फातिमा के अलावा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सारी औलाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ही इंतिकाल फरमा गई थी। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इंतिकाल के 6 माहिने बाद हो गया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली बीवी हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिकाल के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 50 साल थी। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल नबूवत के दसवीं साल हुआ, उस वक़्त हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र 65 साल थी। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की सच्चाई और गमगुसारी को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी वफात के बाद भी हमेशा याद फरमाते थे।

2) "उम्मुल मोमेनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा" यह अपने शौहर (सकरान बिन अमर) के साथ मुसलमान हुई थीं, उनकी मां भी मुसलमान हो गई थीं, मां और शौहर के साथ हिजरत करके हबशा चली गई थीं। वहां उनके शौहर का इंतिकाल हो गया। जब उनका कोई बज़ाहिर दुनियावी सहारा न रहा तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफात के बाद नबूवत के दसवें साल इनसे निकाह कर लिया। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 50 साल और हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र 55 साल थी और यह इस्लाम में सबसे पहली बेवा औरत थीं। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिकाल बाद तक़रीबन चार साल तक सिर्फ हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहीं, क्योंकि हज़रत आइशा की रुखसती निकाह के तीन या चार साल बाद मदीना में हुई। गरज़ तक़रीबन 55 साल की उम्र तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ एक ही औरत रही और वह भी बेवा। हज़रत सौदा का इंतिकाल 54 हिजरी में हुआ।

3) "उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा" यह पहले खलीफा हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हैं। हज़रत अबू बकर सिद्दीक की आरज़ू थी कि मेरी बेटी नबी के घर में हो। उन्हांचे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मक्का ही में हो गया था। मगर नबी करमी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर (मदीना) में 2 हिजरी को आयीं, यानी 3, 4 बाद रुखसती हुई। उस वक़्त नबी

लिए ऐसा रसूल बना कर भेजा है जो खुशखबरी भी सुनाए और खबरदार भी करे।" (सूरह सबा 28)

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उसवए हसना बनी नौए इंसान के लिए

चूँकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलमी रिसालत से नवाज़ा गया है, इसलिए आपकी ज़िन्दगी क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए नमूना बनाई गई जैसा कि अल्लाह तआला बयान फरमाता है "हकीकत यह है कि तुम्हारे रसूल की ज़ात में एक बेहतरीन नमूना है हर उस शख्स के लिए जो अल्लाह से और आखिरत के दिन से उम्मीद रखता हो और कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करता हो।" (सूरह अहज़ाब 21) हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी का एक एक लम्हा क़यामत तक आने वाले इंसानों के लिए नमूना है लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों पर अमल करें। आज हम सुन्नतों पर यह कह कर अमल नहीं करते कि वह फ़र्ज़ नहीं हैं। सुन्नत का मतलब हरगिज़ यह नहीं कि हम उस पर अमल न करें बल्कि हमें अपने नबी की सुन्नतों पर कुर्बान हो जाना चाहिए, मगर अफसोस व फ़िक्र की बात है कि आज हमारे बाज़ भाई सुन्नत पर अमल करना तो दरकिनार बाज़ मरतबा सुन्नत का मज़ाक़ उड़ा जाते हैं। याद रखें कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के मुतअल्लिक़ मज़ाक़ करना इंसान की हलाक़त व बरबादी का सबब है। अल्लाह तआला ने अपने हबीब मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम सुन्नतों को आज ज़िन्दा कर रखा है,

5) "उम्मुल मोमेनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा" इनका पहला निकाह तुफैल बिन हारिस से फिर उबैदा बिन हारिस से हुआ था। यह दोनों नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हकीक़ी चचेरे भाई थे। तीसरा निकाह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश से हुआ था, यह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फूफीज़ाद भाई थे वह जंगे उहद में शहीद हुए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के तीसरे शौहर के इंतिकाल के बाद इनसे 3 हिजरी में निकाह कर लिया था। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 56 साल की थी। वह निकाह के बाद सिर्फ़ तीन माहीने ज़िन्दा रहीं। यह गरीबों की इतनी मदद और परवरिश किया करती थीं कि इनका लक़ब उम्मुल मसाकीन (मिसकीनों की मां) पड़ गया था।

6) "उम्मुल मोमेनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा" इनका पहला निकाह हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु से हुआ था, जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फूफीज़ाद भाई थे। इन्होंने अपने शौहर के साथ हबशा और फिर मदीना की तरफ़ हिजरत की थी। इनके शौहर हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु जंगे उहद के जख्मों से वफ़ात हो गई थी। चार बच्चे यतीम छोड़े। जब कोई ज़ाहिरी दुनियावी सहारा न रहा तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बेकस बच्चों और उनकी हालत पर रहम खाकर इनसे 3 हिजरी में निकाह कर लिया। निकाह के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 56 साल और हज़रत उम्मे

सलमा की उम्र 65 साल थी। 58 या 61 हिजरी में हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल हो गया। उम्महातुल मोमेनीन में सबसे आखिर में इन्हीं का इंतिकाल हुआ।

गरज़ ये कि हज़रत हफसा, हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुन के शौहर जंगे उहद (3 हिजरी) में शहीद हुए, या जख्मों की ताब न लाकर इंतिकाल फरमा गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन बेवा औरतों से इनके लिए दुनियावी सहारे के तौर पर निकाह फरमा लिया।

7) “उम्मुल मोमेनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश” यह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सगी फूफीज़ाद बहन थीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनका निकाह कोशिश करके अपने मुंह बोले बेटे (आज़ाद करदा गुलाम) हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु से करा दिया था। लेकिन शौहर की हज़रत ज़ैनब के साथ नहीं बनी और बीवी को छोड़ दिया। अगरचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को बहुत समझाया, मगर दोनों का मिलाप नहीं हो सका। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की इस मुसीबत का बदला अल्लाह ने यह दिया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ उनका निकाह 5 हिजरी में हो गया, यमि उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 58 साल थी। ज़मानए जाहिलियत में मुंह बोले बेटे को हकीकी बेटे की तरह समझ कर उसकी तलाक़ शुदा या बेवा औरत से निकाह करना जाएज़ नहीं समझते थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु की मुतल्लका औरत से निकाह करके उम्मते

की इताअत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की के बेगैर मुमकिन ही नहीं है।

कुरान करीम के मुफस्सिरे अव्वल हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

अल्लाह तआला अपने पाक कलाम में फरमाता है "यह किताब हमने आपकी तरफ उतारी है कि लोगों की जानिब जो हुकुम नाज़िल फरमाया गया है आप उसे खोल खोल कर बयान कर दें, शायद कि वह गौर व फिक्र करें।" (सूरह नहल 46) इसी तरह फरमाने इलाही है "यह किताब हमने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इसलिए उतारी है ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके लिए हर उस चीज़ को वाज़ेह कर दें जिसमें वह इख़िताफ़ कर रहे हैं।" अल्लाह तआला ने इन दोनों आयात में वाज़ेह तौर पर बयान फरमा दिया कि कुरान करीम के मुफस्सिरे अव्वल हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और अल्लाह तआला की तरफ से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह ज़िम्मेदारी दी गई है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मत मुस्लिमा के सामने कुरान करीम के अहकाम व मसाइल खोल खोल कर बयान करें और हमारा यह ईमान है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अक़वाल व अफ़आल के ज़रिया कुरान करीम के अहकाम व मसाइल बयान करने की ज़िम्मेदारी बहुस्न खूबी अंजाम दी। सहाबा, ताबेईन और तबे ताबेईन के ज़रिये हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफ़आल यानी हदीसे नबवी के ज़खीरा से कुरान करीम की पहली अहम बुनियादी तफसीर इतिहाई काबिले एतेमाद

बचा दिया। नीज़ हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ निकाह करने की वजह से क़बीला बनु मुस्तलक की एक बड़ी जमाअत ने क़बूल कर लिया। (याद रखें कि इस्लाम ने ही अरबों में ज़मानए जाहिलियत से जारी इंसानों को गुलाम व लौंडी बनाने का रिवाज रफ़ता रफ़ता ख़त्म किया है) हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल 50 हिजरी में हुआ।

9) "उम्मुल मोमेनीन हज़रत सफ़िया बिन्ते हैय बिन अख़तब रज़ियल्लाहु अन्हा" इनका तअल्लुक यहूदियों के क़बीला बनु नज़ीर से है। हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं। इनके बाप, भाई और इनके शौहर को जंग में क़त्ल कर दिया गया था। यह कैद हो कर आईं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको इख़्तियार दिया कि चाहें इस्लाम ले आएँ या अपने मज़हब पर क़सी रहें। अगर इस्लाम लाती हैं तो मैं निकाह करने के लिए तैय़ार वरना इनको आज़ाद कर दिया जाएगा, ताकि अपने खानदान के साथ जा मिलें। हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा अपने खानदान के लोगों में वापसी के बजाए इस्लाम क़बूल करके नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकाह करने के लिए तैय़ार हो गईं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको आज़ाद कर दिया, फिर 7 हिजरी में इनसे निकाह कर लिया, निकाह के वक़्त नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 60 साल थी। हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल 50 हिजरी में हुआ।

10) "उम्मुल मोमेनी हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा" हज़रत सुफयान उमवी रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हैं। जिन दिनों इनके वालिद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ लड़ाई लड़ रहे थे यह मुसलमान हुई थीं। इस्लाम के लिए बड़ी बड़ी तकलीफें उठाईं, फिर शौहर को लेकर हबशा की तरफ हिजरत की, वहां जा कर उनका शौहर मुरतद हो गया। ऐसी सच्ची और ईमान में पक्की औरत के लिए यह कितनी बड़ी मुसीबत थी कि इस्लाम के वास्ते बाप, भाई, खानदान और अपना मुल्क छोड़ा था, परदेस में खाविन्द का सहारा था, उसकी बेदीनी से वह भी जाता रहा। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऐसी साबिरा औरत के साथ हबशा ही में 7 हिजरी में निकाह किया, यानी उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 60 साल थी। 44 हिजरी में हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल हो गया।

11) "उम्मुल मोमेनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा" इनके दो निकाह हो चुके थे। इनकी एक बहन हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के, एक बहन हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के और एक बहन हज़रत जाफर तैयार रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में थीं। एक बहन हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की मां थीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के कहने पर 7 हिजरी में हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह कर लिया। निकाह के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 60 साल थी। 51 हिजरी में हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की वफात हुई।

की नमाज़ के लिए) खड़े होते हो और तुम्हारे साथियों (सहाबा-ए-किराम) में से भी एक जमाअत (ऐसा ही करती है)।”

उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को क़याम फरमाते, यानी नमाज़े तहज्जुद अदा करते यहां तक कि आप के पांच मुबारक में वरम आ जाता। (बुखारी) सिर्फ़ एक दो घंटे नमाज़ पढ़ने से पैरों में वरम नहीं आता है बल्कि रात के एक बड़े हिस्से में अल्ला तआला के सामने खड़े होने, तवील रुकू और सजदा करने की वजह से वरम आ जाता है, चुनांचे सूरह बकरह और सूरह आले इमरान जैसी लम्बी लम्बी सूरेतें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रिक़ात में पढ़ा करते थे और वह भी बहुत इतमिनान व सुकून के साथ।

नमाज़े तहज्जुद के अलावा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पांच फ़र्ज़ नमाज़ें भी खुशू व खुजू के साथ अदा करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुन्नत और नफल, नमाज़े इशराक़, नमाज़े चाशत, तहिय्यतुल मस्जिद और तहिय्यतुल वज़ू का भी एहतेमाम फरमाते और फिर खास खास मौक़ा पर नमाज़ ही के ज़रिया अल्लाह तआला से रुजू फरमाते। सूरज गरहन या चांद गरहन होता तो मस्जिद तशरीफ़ ले जाकर नमाज़ में मशबूम हो जाते। कोई परेशानी या तकलीफ़ पहुंचती तो मस्जिद को रुख़ करते। सफ़र से वापसी होती तो पहले मस्जिद तशरीफ़ ले जाकर नमाज़ अदा करते और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतमिनान व सुकून के साथ नमाज़ पढ़ा करते थे।

से ज्यादा शादी करने का आम रिवाज था, नीज़ सही बुखारी की हदीस में है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चालीस मर्द की ताकत दी गई थी। गौर फरमाएं कि चालीस मर्द की ताकत रखने के बावजूद नबी करम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरी जवानी उस बेवा औरत के साथ गुज़ार दी जो पहले दो शादियां कर चुकी थीं, नीज़ उनके पहले शौहरों से बच्चे भी थे। उसके बाद तीन चार साल एक दूसरी बेवा हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ गुज़ार दिए। इस तरह 55 साल की उम्र तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ एक बेवा औरत रही।

50 से 60 साल की उम्र में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह किए जिनके सियासी व दीनी व इजतिमाई चंद असबाब यह हैं।

1) खलीफए अब्बल हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा, दूसरे खलीफा हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हज़रत हफसा रज़ियल्लाहु अन्हा से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह किए। तीसरे खलीफा हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु और चौथे खलीफा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी साहबजादियों का निकाह किया। गरज़ ये कि निकाह के ज़रिये (आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद आने वाले) चारों खुलफा के साथ दामाद या ससुर का रिश्ता कायम हो गया, जिससे सहाबा के दरमियान तअल्लुक मज़बूत और मुस्तहकम हुआ और उम्मत में इत्तिहाद व इत्तिफाक पैदा हुआ।

2) जंगों में बाज़ सहाबा किराम शहीद हुए या कुपफारे मक्का ने मुसलमान औरतों को तलाक दे दी तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन बेवा या मुतल्लका औरतों पर शफक़त व करम का मामला फरमाया और उनसे निकाह कर लिया, ताकि उन बेवा या मुतल्लका औरतों को किसी हद तक दिली तसकीन मिल सके, नीज़ इंसानियत को बेवा और मुतल्लका औरतों से निकाह करने की तरगीब दी।

3) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारे निकाह बेवा या मुतल्लका औरतों से किए, लेकिन सिर्फ एक निकाह कुवारी लड़की हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हु से किया, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत में रह कर मसाइल से अच्छी तरह वाक़फियत हासिल की। अरबी मुहावरा है "छोटी उम्र में इल्म हासिल करना पत्थर पर नक्श की तरह होता है।" तक़रीबन 2210 अहादीस हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इंतिकाल के 42 साल बाद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल हुआ, यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद 42 साल तक उलूमे नबूवत को उम्मत मोहम्मदिया तक पहुंचाती रहीं।

4) यहूद व नसारा में से जो हज़रात मुसलमान हुए उनके साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शफक़त व रहमत का मामला फरमाया। चुनांचे हज़रत सफिया रज़ियल्लाहु अन्हा मुसलमान हुई तो

(बीवी, बांदी वगैरह) को। (तिर्मिज़ी) हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि भूख अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न तो तबअन फहशगो थे न बतकल्लुफ फहश बात फरमाते थे, न बाजारों में खिलाफे वकार बातें करते थे। बुराई का बदला बुराई से नहीं देते थे बल्कि माफ फरमा देते थे और इसका तज़क़िरा भी नहीं फरमाते थे। (तिर्मिज़ी) हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा फरमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बातों से अपने आपको अलाहदा फरमा रखा था, झगड़े से, तकब्बुर से और बेकार बातों से और तीन बातों से लोगों को बचा रखा था, न किसी की बुराई करते, न किसी को ऐब लगाते और न ही किसी के ऐबों की तलाश करते थे। (तिर्मिज़ी) हमें चाहिए कि हम अपने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अखलाके हमीदा को पढ़ें और उनको अपनी ज़िन्दगी में लाने की हर मुमकिन कोशिश करें।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की घरेलू ज़िन्दगी

कुरान करीम रोज़े कयामत तक के लिए लोगों से मुखातिब है “ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए यह हलाल नहीं कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद उनकी बीवियों में से किसी से निकाह करो।” (सूरह अहज़ाब 53) यानी अज़वाजे मुतहहरात (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियां) तमाम ईमान वालों के लिए मां (उम्मुल मोमेनीन) का दर्जा रखती हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह फरमाए। इनमें सिर्फ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कुंवारी थीं, बाकी सब बेवा या तलाक़याफ़ता। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सारी औलाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली बीवी हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से मक्का में पैदा हुई सिवाए आपके बेटे हज़रत इब्राहिम के, वह हज़रत मारिया किबतिया से मदीना में पैदा हुए।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तीन बेटे

1) कासिम 2) अब्दुल्लाह 3) इब्राहिम

कासिम - मक्का में नबूवत से पहले पैदा हुए। दो साल छः महीने के हुए तो उनका इंतिकाल हो गया। बाज़ हजरात ने लिखा है कि कासिम 7 महीने की उम्र में ही अल्लाह को प्यारे हो गये थे। मक्का में मदफून हैं। इन्हीं की तरफ निसबत करके आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अबुल कासिम कहा जाता है।

अब्दुल्लाह - मक्का में नबूवत के बाद पैदा हुए। दो साल से कम उम्र ही में उनका इंतिकाल हो गया। मक्का में मूक हैं। इनको तय्यब व ताहिर भी कहा जाता है। इन्हीं की मौत पर किसी शख्स ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अबतर कहा (वह शख्स जिसकी कोई औलाद न हो) तो सूरह अलकौसर नाज़िल हुई, जिस में अल्लाह तआला ने फरमाया कि तेरा दुशमन ही बे औलाद रहेगा।

इब्राहिम - इनकी पैदाइश मदीना में 8 हिजरी में हुई इब्राहिम की पैदाइश पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा-ए-किराम बहुत खुश हुए। सात दिन के होने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनका अक्रीका किया, बाल मुंडवाए, बालों के वज़न के बराबर मिसकीनों को सदका दिया और बालों को दफन कर दिया।

10 हिजरी में 16 या 18 महीने की उम्र में बीमारी की वजह से इब्राहिम का इंतिकाल हो गया। इब्राहिम के इंतिकाल पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काफी रंजीदा व मगमूम हुए। मदीना के मशहूर कब्रिस्तान (अलबक्री) में मदफून हैं। इन्हीं के इंतिकाल के दिन सूरज गरहन हुआ, लोगों ने समझा कि इब्राहिम की मौत की वजह से यह सूरज गरहन हुआ है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया सूरज और चांद अल्लाह तआला की निशानियाँ में से दो निशानियाँ हैं यह किसी की जिन्दगी या मौत पर ख़न नहीं होते हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चार बेटियाँ

- 1) ज़ैनब
- 2) रुक़य्या
- 3) उम्मे कुलसूम
- 4) फातिमा

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तीन बेटियाँ आपकी हयाते मुबारका ही में इंतिकाल फरमा गईं, अलबत्ता हज़रत फातिमा का इंतिकाल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के छः महीने बाद हुआ। चारों बेटियाँ मदीना के मशहूर कब्रिस्तान (अलबक्री) में मदफून हैं।

ज़ैनब - आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे बड़ी साहबजादी हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र जब 30 साल की थी यह पैदा हुई। उनके शौहर हज़रत अबुल आस बिन रबी थे। उनसे दो बच्चे अली और उमामा पैदा हुए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीना हिजरत करने के बाद हज़रत ज़ैनब अपने शौहर के साथ काफी दिनों तक मक्का ही में मुक़ीम रहीं। जब

तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ एक ही औरत रही और वह भी बेवा।

उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह किए। यह निकाह किसी शहवत को पूरी करने के लिए नहीं किए कि शहवत 50 से 55 साल की उम्र के बाद अचानक ज़ाहिर हो गई हो, बल्कि सियासी व दीनी व इजतिमाई असबाब को सामने रखकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह निकाह किए। अगर शहवत पूरी करने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निकाह फरमते तो कुंवारी लड़कियाँ से शादी करते, नीज़ हदीस में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी औरत से शादी नहीं की और न किसी बेटी का निकाह कराया मगर अल्लाह की तरफ से हज़रत जिबरइल अलैहिस्सलाम वही ले कर आए।

खुलासा कलाम

अल्लाह तआला ने कुरान करीम में जगह जगह अपने हबीब मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के औसाफे हमीदा बयान फरमाए हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ अपने ज़माने के लोगों के लिए बल्कि क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए हैं और नबूवत का सिलसिला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खत्म कर दिया गया है, यानी अब क़यामत तक कोई नबी नहीं आएगा, यही शरीअते मोहम्मदिया (यानी उलूमे कुरान व हदीस) कल क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए मशअले राह है। गरज़ ये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलमी रिसालत से नवाज़ा गया है। इतने अज़ीम व

लहब के कहने पर उस बेटे ने भी हज़रत उम्मे कुलसूम को तलाक दे दी। हज़रत रुक़य्या के इंतिक़ाल के बाद उनकी शादी हज़रत उसमान बिन अफ़फ़ान से हुई। 9 हिजरी में इंतिक़ाल फरमा गई। इंतिक़ाल के वक़्त हज़रत उम्मे कुलसूम की उम्र तक़रीबन 25 साल थी। हज़रत उम्मे कुलसूम के इंतिक़ाल के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि अगर मेरे पास कोई दूसरी लड़की (ग़ैर शादी शुदा) होती तो मैं उसका निकाह भी हज़रत उसमान गनी से कर देता।

फातिमा ज़ोहरा - आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे छोटी साहबज़ादी हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत फातिमा से बहुत मोहब्बत फरमाते थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र जब 35 या 41 साल थी यह पैदा हुई। इनका निकाह मदीना में हज़रत अली बिन अबू तालिब के साथ हुआ। सुबहानल्लाह, अलहमदु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर की तसबीहात हज़रत फातिमा की दिन भर की थकान को दूर करने के लिए अल्लाह तआला की तरफ से हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ले कर आए थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इंतिक़ाल के छः महीने बाद हज़रत फातिमा 23 या 29 साल की उम्र में इंतिक़ाल फरमा गई।

हज़रत फातिमा बिनते नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद

- | | |
|----------|-----------------|
| 1) हसन | 2) हुसैन |
| 3) ज़ैनब | 4) उम्मे कुलसूम |

हज़रत हसन - रमज़ान 3 हिजरी में पैदा हुए। हज़रत हसन सर से सीने तक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह थे। हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम हसन नाम को जन्नत के रेशम में लपेट कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में ले कर आए थे और हुसैन हसन से माखूज़ है। हज़रत अली की शहादत के बाद 41 हिजरी में आपके हाथ पर बैत की गई और अमीरुल मोमेनीन का लक़ब दिया गया। रबीउल अव्वल 41 हिजरी में हज़रत मआविया से स्नाह कर ली। इस तरह हज़रत हसन 6 महीने और 20 दिन अमीरुल मोमेनीन रहे। हज़रत हसन को ज़हर दिया गया, 40 दिन तक ज़हर से मुतअस्सिर रहे और रबीउल अव्वल 49 हिजरी में इंतिक़ाल फरमा गए। मदीना (अलबक़ी) में मदफून हैं।

हज़रत हुसैन - 4 हिजरी में पैदा हुए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हसन की तरह हज़रत हुसैन का भी अक़ीका किया। हज़रत हुसैन सीने से टांगों तक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह थे। 10 मुहर्रमुल हराम जुमा के दिन 61 हिजरी में उसके इराक़ में का शहर के करीब मैदाने करबला में शहीद हुए।

हज़रत उम्मे कुलसूम - यह हज़रत उमर फारुक रज़ियल्लाहु अन्हु की अहलिया है। इनसे हज़रत ज़ैद और हज़रत रुक़य्या पैदा हुए।

हज़रत ज़ैनब - इनका निकाह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर बिन अबी तालिब के साथ हुआ। उनसे जाफर, औनुल अकबर, उम्मे कुलसूम और अली पैदा हुए।

हुजूर अकरम सललल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी है

अल्लाह तआला ने हुजूर अकरम सललल्लाहु अलैहि वसल्लम को खातमुल अम्बिया वलमुरसलीन बना कर भेजा, आप सललल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद नबूवत व रिसालत का दरवाजा हमेशा के लिए बन्द कर दिया गया, आप सललल्लाहु अलैहि वसल्लम को दीने कामिल अता किया गया, चुनांचे कयामत तक सिर्फ और सिर्फ शरीअते मोहम्मदिया (यानी कुरान व हदीस और उनसे माखूज उलूम) ही इंसानों के लिए मशअले राह हैं। हुजूर अकरम सललल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सिलसिला नबूवत व रिसालत के इखितताम की एक वाज़ेह दलील यह भी है कि आप सललल्लाहु अलैहि वसल्लम कयामत तक पूरी इंसानियत के लिए पैगम्बर बना कर भेजे गए, अल्लाह तआला ने आप सललल्लाहु अलैहि वसल्लम की आलमी रिसालत को अपने पाक कलाम में बहुत बार बयान फरमाया है, सिर्फ तीन आयात पेशे खिदमत है।

“ऐ रसूल! उनसे कहो कि ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ उस अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ जिसके कब्जे में तमाम आसमानों और ज़मीनों की सलतनत है।” (सूरह आराफ 158)

“और (ऐ पैगम्बर) हमने तुम्हें सारे ही इंसानों के लिए ऐसा रसूल बना कर भेजा है जो खुशखबरी भी सुनाए और खबरदार भी करे।” (सूरह सबा 28)

“और (ऐ पैगम्बर) हमने तुम्हें सारे जहानों के लिए रहमत ही रहमत बना कर भेजा है।” (सूरह अम्बिया 107)

लिबासुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

पहला बाब: लिबास

यह मकाला सैयदुल अम्बिया व सैयदुल बशर हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिबास के बयान में है। इस मकाला को लिखने का अहम मक़सद व गरज़ यह है कि हम अपने लिबास में हत्तल इमकान नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके को इख़्तियार करें और वह लिबास जिसकी वज़ा क़ता औ पहनना ग़ैर मसनून है इससे परहेज़ करें। अल्लाह तआला ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके को कल क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए नमूना बनाया है जैसा कि क़ुरान करीम में इरशाद है “तुम सब के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम की ज़ात में बेहतरीन नमूना है।” (सूरह अहज़ाब 21)

लिबास मसदर है जिसके मानी मलबूस (यानी पोशाक) के जैसा कि किताब जिसके मानी मकतूब। लिबास का लफ़ज़ अमामा, टोपी, कमीस, जुब्बा, चादर, तहबन्द, पाजामा और जो कुछ पहनने में आए सबको शामिल है।

अल्लाह तआला ने लिबास के मुतअल्लिक क़ुरान करीम में इरशाद फरमाया “ऐ आदम अलैहिस्सलाम की औलाद हमने तुम्हारे लिए लिबास बनाया जो तुम्हारी शरमगाहों को भी छुपाता है और मौजिबे ज़ीनत भी है और बेहतरीन लिबास तक़वा का है।” (सूरह आराफ़ 26) तक़वा से मुराद वह लिबास है जिसमें हया हो। इसके मक़ाम पर

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया “और तुम्हें ऐसी पोशाकें दीं जो तुम्हें गर्मी से बचाती हैं।” (सूरह नहल 81)

कुरान व सुन्नत की रौशनी में उलमा-ए-किराम ने लिखा है कि इंसान अपने इलाके की आदात व अतवार के लिहाज़ से चंद शराएत के साथ कोई भी लिबास पहन सकता है, क्योंकि लिबास में असल जवाज़ है जैसा कि सूरह आराफ 32 में अल्लाह तआला ने बयान फरमाया कि लिबास और खाने की चीज़ों में वही चीज़ हराम है जिसको अल्लाह तआला ने हराम कर दिया है।

दूसरा बाब: शरई लिबास के चंद बुनियादी शराएत

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल की रौशनी में उलमा-ए-किराम लिबास के बाज़ हस्बे ज़ैल शराएत लिखे हैं।

- 1) मर्द हज़रात के लिए ऐसा लिबास पहनना फ़र्ज़ है जिससे नाफ से लेकर घुटने तक जिस्म छुप जाए और ऐसा लिबास पहनना सुन्नत है जिससे हाथ, पैर और चेहरे के अलावा पूरा जिस्म छुप जाए। औरतों के लिए ऐसा लिबास पहनना फ़र्ज़ है जिससे हाथ, पैर और चेहरे के अलावा उनका पूरा जिस्म छुप जाए।

नोट - यहां लिबास का बयान है न कि परदे का, गरज़ ये कि गैर महरम के सामने औरत को चेहरा ढांकना ज़रूरी है

- 2) लिबास नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात के खिलाफ न हो। (मसलन मर्द हज़रात के लिए रेशमी कपड़े और खालिस सुर्ख या ज़र्द रंग का लिबास)

किया है। बाज़ उलमा ने तो कुरान करीम की हर सूरत से खत्म नबूवत को साबित किया है। मैं इख़्तिसार की वजह से सिर्फ़ एक आयत पेश कर रहा हूँ। “मुसलमानो! मोहम्मद तुम मर्द में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल हैं और तमाम नबियों में से सबसे आखिरी नबी हैं।” (सूरह अहज़ाब 40)

ज़मानए जाहिलियत में मुब्बिना (मुंह बोले बेटे) को हकीकी बेटा समझा जाता था। इस आयत के शुरू में इसी की तरदीद की कि मुंह बोले बेटे हकीकी बेटे के हुकुम में नहीं हैं, लिहाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के बाप नहीं हैं। उसके बाद अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है “आप अल्लाह के रसूल और आखिरी नबी हैं।” मेरे इस मुद्दतसर मज़मून का तअल्लुक इस मज़कूरा बाला आयत में इसी इबारत से है। इससे साफ़ साफ़ मालूम हो गया कि दीने इस्लाम और नेमतें नबूवत व रिसालत हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तमाम हो चुकी हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद किसी नबी की गुंजाइश और ज़रूरत नहीं है, जैसा कि अल्लाह तआला ने दूसरी जगह इरशाद फरमाया “हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दी।” (सूरह माइदा 3)

अल्लाह तआला रब्बुल आलमीन है, यानी क़यामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात और पूरी कायनात का पालने वाला है, इसी तरह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सिर्फ़ अरबों के लिए या अपने ज़माने के लोगों के लिए या सिर्फ़ मुसलमानों के लिए नबी व रसूल बना कर नहीं भेजे गए, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि

वह बहुत पाकीज़ा, बहुत साफ और बहुत अच्छा है और इसी में अपने मुर्दे को कफन दिया करो। (नसई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)
 ज़्यादा पाकीज़ा इसलिए कि वह बहुत जल्दी मैले हो जाते हैं, इसीलिए ज़्यादा धोए जाते हैं बरखिलाफ रंगीन कपड़ों के, क्योंकि देर से धोए जाने की वजह से उनमें ज़्यादा गंदगी होती है। अच्छे इसलिए कि तबियते सलीमा इनकी तरफ मैलान करती है। (अशअतुल लमआत)

शैख फकीह फकीह अबुल लैस समरकंदी ने अपनी किताब "बुस्तानुल आरफीन" में और फिक्रह हनफी की मशहूर व मारुफ किताब "रदुल मुख्तार" के मुसन्नफ अल्लामा शामी ने लिखा है कि रंगों में पसंदीदा रंग सफेद है और सफेद लिबास पहनना सुन्नत है।

चौथा बाब रंगीन लिबास के मुतअल्लिक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात व अमल

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़्यादा तर सफेद लिबास पहना करते थे अगरचे दूसरे रंग के कपड़े भी अप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्तेमाल किए हैं। रंगीन लिबास चादर या इबा याजुब्बा की शकल में उमूमन हुआ करता था क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कमीस और तहबंद उमूमन सफेद हुआ करती थी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन अलआस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको खालिस ज़र्द रंग के कपड़ों में मत्स्र देखा तो फरमाया कि यह काफिरों का लिबास है, इसको न पहनो। (मुस्लिम 2077) एक

रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इनको जला डालो।

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया न तो मैं अरगवानी घोड़े पर सवार हूंगा और न पीले रंग के कपड़े पहनूंगा जो रेशमी हाशिये वाले हों और फरमाया कि खबरदार रहो कि मर्द की खुशबू वह खुशबू है जिसमें रंग न हो और औरतों की खुशबू वह खुशबू है जिसमें खुशबू न हो रंग हो। (मिशकात 375) अरगवान एक सुर्ख रंग का फूल है, अब हर सुर्ख रंग को अरगवानी कहा जाता है वही यहां मुराद है।

हज़रत अबी रिमशा रिफाअह रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दो सब्ज़ कपड़ों में मलबूसा देखा। (अबू दाउद, तिर्मिज़ी)

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कद दरमियानी था, एक मरतबा मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुर्ख धारियों वाली चादर में मलबूसा देखा। मैंने कभी भी इससे ज़्यादा खूबसूरत मनज़र नहीं देखा। (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवात है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुर्ख धारियों वाली यमनी चादर को बहुत पसंद फरमाते थे। (बुखारी व मुस्लिम)

(वज़ाहत) बाज़ रिवायात में आया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुर्ख पोशाक इस्तेमाल की है, जबकि दूसरे अहादीस में

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी मिसाल मुझसे पहले अम्बिया के साथ ऐसी है जैसे किसी शख्स ने घर बनाया और उसको बहुत उम्दा और आरास्ता व पैरास्ता बनाया, मगर उसके गोशा में एक ईंट की जगह तामीर से छोड़ दी, पस ब्या उसके देखने को जूक दर जूक आते हैं और खुश होते हैं और कहते जाते हैं कि यह एक ईंट भी क्यों न रख दी गई (ताकि मकान की तामीर पूरी हो जाती) चुनांचे मैंने उस जगह को भर दिया और मुझसे ही नबूवत की कमी पूरी हुई और मैं ही नबियों में आखिरी नबी हूं और मुझ पर तमाम रसूल खत्म कर दिए गए। (सही मुस्लिम, तिर्मीज़ी, नसई, मुसनद अहमद) हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मिसाल देकर खल्मे नबूवत के मसअला को रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह फरमा दिया।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया बनी इसराइल के सियासत खुद उनके अम्बिया अलैहिमुस्सलाम किया करते थे, जब किसी नबी की वफात होती थी तो अल्लाह तआला किसी दूसरे नबी को उनका खलीफा बना देता था, लेकिन मेरे बाद कोई नबी नहीं, अलबत्ता खुलफा होंगे और बहुत होंगे। (बुखारी व मुस्लिम)

कुरान व हदीस की रौशनी में खैरुल कुरून से आज तक पूरी उम्मत मुस्लिमा का इत्तिफाक है कि नबूवत व रिसालत का सिलसिला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खत्म हो गया, अब कोई नबी पैदा नहीं होगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के

छठा बाब: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमामा

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमामा अक्सर औकात सफेद ही हुआ करता था और कभी सियाह और कभी सब्ज़। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमामा आम तौर पर 6 या 7 गज़ लम्बा हुआ करता था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अमामा बांधते तो उसे दोनों कंधों के दरमियान डालते थे। यानी अमामा शरीफ का "शिमला" दोनों कंधों के दरमियान लटकता रहता था। (मिशकात 374)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि फतहे मक्का के दिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस हाल में मक्का में दाखिल हुए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर पर सियाह अमामा था। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

हज़रत जाफर बिन अमर बिन हरैस अपने वालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर मुबारक पर सियाह अमामा देखा। (तिर्मिज़ी)

(नोट) शिमला लटकाना मुस्तहब है और सुनने ज़वाएद में से है। शिमला की कम से कम मिक्दार चार अंगुल है और ज़्यादा से ज़्यादा एक हाथ है।

सातवां बाब: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की टोपी

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आम तौर पर सफेद टोपी पहना करते थे। वतन में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सर से चिपकी हुई टोपी पहना करते थे, अलबत्ता आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के सफर की टोपी उठी हुई होती थी। अल्लामा इबनुल कय्थिम रहमतुल्लाह अलैहि अपनी बुलंद पाया किताब "ज़ादुल मआद फी हदयि खैरिल इबाद" में लिखते हैं कि आप सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम अमामा बांधते थे और उसके नीचे टोपी भी पहनते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अमामा के बेगैर भी टोपी पहनते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम टोपी पहने बेगैर भी अमामा बांधते थे। सउदी अरब के तमाम शैख का फतवा भी यही है कि टोपी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत और तमाम मुहद्दिसीन व मुफस्सेरीन, फुकहा व उलमाए सालेहीन का तरीका है नीज़ टोपी पहनना इंसान की ज़ीनत है और कुरान करीम (सूरह आराफ 31) की रौशनी में नमाज़ में ज़ीनत मतलूब है, लिहाज़ा हमें नमाज़ टोपी पहन कर ही पढ़नी चाहिए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने गुलाम नाफे को खुले सर नमाज़ पढ़ते देखा तो बहुत गुस्सा हुए और कहा कि अल्लाह तआला ज़्यादा मुस्तहिक है कि हम उसके सामने ज़ीनत के साथ हाज़िर हों। इमाम अबू हनीफा ने खुले सर नमाज़ पढ़ने को मकरूह करार दिया है। मौजूदा ज़माना के मुहद्दिस शैख नासिरुद्दीन अलबानी ने भी अपनी किताब "तमामुल मिन्नत" के पेज 164 पर लिखा है कि ज़ेरे बहस मसअला में मेरी राय यह है कि खुले सर नमाज़ पढ़ना मकरूह है।

आठवां बाब: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जुब्बा

हज़रत असमा बिनते अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि उन्होंने एक तयालसी किसरवानिया जुब्बा मुबारक निकाला जिसका गिरेबान रेशम का था और उसके दोनों दामन रेशम से सिले हुए थे

बेमिसाल अदीब अरबी हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवामिउल कलिम (अकवाले ज़री)

फसाहत व बलागत के पैकर और बेमिसाल अदीबे अरब हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मुझे जवामिउल कलिम से नवाज़ा गया है। (सही बुखारी) जिसका हासिल यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छोटे से जुमले में बड़े वसी मानी को बयान करने की कुदरत रखते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेशुमार खुसूसियात में से एक अहम तरीन खुसूसियत यह भी है कि जिस वक़्त आप पर पहली वही नाज़िल हुई और आपसे पढ़ने के लिए कहा गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने “मा अना बिक़ारी” कह कर माज़रत चाही, लेकिन अल्लाह तआला की जानिब से ऐसी खासुल खास तरबियत हुई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कौल व अमल को रहती दुनिया तक उसवा बना दिया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल ज़री से फायदा उठाने वाले हज़रात बड़े बड़े अदीब व फसीह व बलीग बन कर दुनिया में चमके। आपकी ज़बाने मुबारक से निकले बाज़ जुमले रहती दुनिया तक अरबी ज़बान के मुहावरे बन गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वाज़ व नसीहत, खुतबे, दुआ और रसाइल से अरबी ज़बान को अल्फ़ाज़ के नए ज़खीरे के साथ एक मुंफरिद उसलूब भी मिला।

यह एक मोजज़ा ही तो है कि “मा अना बिक़ारी” कहने वाला शख्स कुछ ही अरसा बाद एक मौक़ा पर इरशाद फरमाता है “मैं अरब में सबसे ज़्यादा फसीह हूँ, इसकी वजह यह है कि मैं कबीला कुरैश से हूँ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया लिबास का जितना हिस्सा टखनों से नीचे हो वह जहन्नम की आग में है (बुखारी 10/218)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया लटकाना तहबन्द, कमीस और अमामा में पाया जाता है, जिसने इनमें से किसी लिबास को बतौर तकब्बुर टखनों से नीचे लटकाया अल्ला तआला क्रयामत के दिन उसकी जानिब नज़रे रहमत नहीं फरमाएगा। (अबू दाउद, नसई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि जो हुकुम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पाजामा के मुतअल्लिक फरमाया वही हुकुम कमीस का भी है। (अबू दाउद)

मज़कूरा व दूसरी अहादीस की रौशनी में उलमा ने इस मसअला की मज़कूरा शकलें इस तरह ज़िक्र फरमाई हैं।

आधी पिंडली तक लिबास: नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत।

टखनों तक लिबास: रुख्सत यानी इजाज़त

तकब्बुर के बेगैर टखनों से नीचे लिबास: मकरूह

तकब्बुराना टखनों से नीचे लिबास: हराम

औरतों का लिबास टखनों से नीचा होना चाहिए

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स बतौर तकब्बुर अपना कपड़ा घसीटे अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी जानिब नज़रे रहमत नहीं फरमाएगा। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने सवाल किया कि औरतें अपने दामन का क्या करें? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह (आधी पिंडली से) एक बालिशत नीचे लटकाएं। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दोबारा सवाल किया कि अगर फिर भी उनके क़दम खुले रहें? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह (आधी पिंडली से) एक ज़िरा (शरई पैमाना जो तक्करीबन 30 सेंटीमीटर का होता है) नीचे लटकाएँ, लेकिन इससे ज़्यादा नहीं। (अबू दाउद, तिर्मिज़ी)

दसवां बाब: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिबास में दरमियाना रवी

रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आला व उमदा क़ीमती लिबास भी पहने हैं मगर इनकी आदत नहीं डाली। हर किस्म का लिबास बेतकल्लुफ़ पहन लेते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने दुनिया में शोहरत का कपड़ा पहना, बरोज़े क़यामत अल्लाह तआला उसे ज़िल्लत का कपड़ा पहनाएगा। (अबू दाउद)

जरी को याद करके महफूज़ करने की भी खास फज़ीलत आई हैं चुनांचे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "जो शख्स मेरी उम्मत के फायदा के वास्ते दीन के काम की चालीस अहादीस याद करेगा अल्लाह तआला उसको क़यामत के दिन आलिमों और शहीदों की जमाअत में उठाएगा और फरमाएगा कि जिस दरवाज़ से चाहे जन्नत में दाखिल हो जाए।" यह हदीस हज़रत अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद, हज़रत मआज़ बिन जबल, हज़रत अबू दरदा, हज़रत अबू हुरैरा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत जाबिर और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हुम से रिवायत है और हदीस की मुख्तलिफ किताबों में लिखी है। बाज़ उलमा ने हदीस की सनद में कुछ कलाम किया, मगर हदीस में मज़कूरा सवाब के हुसूल के लिए सैकड़ों उलमा ने अपने अपने तर्ज़ पर चालीस अहादीस जमा की हैं। सही मुस्लिम की सबसे मशहूर शरह लिखने वाले इमाम नववी की चालीस अहादीस पर मुशतमिल किताब "अलअरबईन नाँविया" पूरी दुनिया में काफी मकबूल हुई है। सही बुखारी व सही मुस्लिम में वारिद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चालीस फरमान पेशे खिदमत हैं जिनमें इल्म व मारिफत के खज़ाने भर दिए गए हैं और यह आला अखलाक और तहज़ीब व तमदुन के जरी उसूल हैं। लिहाजा हमें चाहिए कि इन अहादीस को याद करके इन पर अमल करें और बुराई को पहुंचाएं ताकि गैर मुस्लिम हज़रात भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सही तालीमात से वाकिफ हो इस्लाम से मुतअल्लिक अपने शक व शुबहात दूर कर सकें ।

जन्नत के ज़ेवरात में से जो वह चाहेगा उसको पहनाया जाएगा।
(तिर्मिज़ी 2483)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख्स नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में गंदे कपड़े पहने हुए हाज़िर हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या उस शख्स को कोई चीज़ नहीं मिली कि यह अपने कपड़े धो सके? (नसई, मुसनद अहमद)

गरज़ ये कि हम सब इस्तिताअत फुज़ूल खर्ची के बेगैर अच्छे व साफ सुथरे लिबास पहनने चाहिए।

ग्यारहवां बाब: लिबास के मुतअल्लिक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बाज़ सुन्नतें

- दायीं तरफ से कपड़ा पहनना सुन्नत है:

हज़रत अबू हु़रैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि उहूँर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब कमीस पहनते तो दायीं तरफ से शुरू फरमाते। (तिर्मिज़ी जिल्द1 पेज 302) इस तरह कि पहले दायां हाथ दाएं आस्तीन में डालते फिर बायां हाथ बाएं आस्तीन में डालते।

- नया लिबास पहनने की दुआ:

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि उहूँर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नया कपड़ा पहनते तो इसका नाम रखते अमामा या कमीस या चादर फिर यह दुआ पढ़ते "ऐ मेरे अल्लाह! तेरा शुक्र है कि तूने मुझे यह पहनाया, मैं इस कपड़े की खैर और जिसके लिए यह बनाया गया है उसकी खैर मांगता हूँ

और इसकी और जिसके लिए यह बनाया गया उसके शर से पनाह मांगता हूँ।" (अबू दाउद, तिर्मिज़ी)

- पाजामा पहनने का तरीका

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात में है कि पाजामा या शलवार बैठ कर पहनें। बाज़ अहादीसे ज़ईफ़ा में खड़े होकर पाजामा वगैरह पहनने पर सख्त वर्इद आई है, मसलन जिसने बैठ कर अमामा बांधा या खड़े हो पाजामा या शलवार पहनी तो अल्लाह तआला उसे ऐसी मुसीबत में मुब्तला फरमाएगा जिसकी कोई दवा नहीं। यह हदीस शैख शाह अब्दुल हक ने अपनी किताब "कशफुल इलतिबास फी इस्तिहबाबिल लिबास" में ज़िक्र की है। हमारे उल्ला हमेशा एहतियात पर अमल करते हैं, लिहाज़ा एहतियात इसी में है कि हम अपना पाजामा वगैरह बैठ कर पहनें अगरचे खड़े होकर पहनना भी जाएज़ है।

- बालों की चादर

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि जुन्नूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब एक मरतबा सुबह को मकान से तशरीफ ले गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बदन पर सियाह बालों की चादर थी। (शमाइले तिर्मिज़ी)

बारहवां बाब: रेशमी लिबास के मुतअल्लिक़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात

रेशमी लिबास पहनना मर्द के लिए हराम है, अलबत्ता 2 या 3या 4 अंगुल रेशमी हाशिया वाले कपड़े मर्द हज़रात के लिए जाएज़ हैं, नीज़

- 7) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैं आखिरी नबी हूँ, मेरे बाद कोई नबी पैदा नहीं होगा। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)
- 8) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया पाक रहना आधा ईमान है। (सही मुस्लिम)
- 9) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह के नज़दीक सबसे महबूब जगह मस्जिदें हैं। (सही मुस्लिम)
- 10) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मुझ पर एक मरतबा दरूद भेजा अल्लाह तआला उसपर 10 मरतबा रहमतें नाज़िल फरमाएगा। (सही मुस्लिम)
- 11) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मोमिन एक बिल से दोबारा डसा नहीं जाता है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)
- 12) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया पहलवान शख्स वह नहीं जो लोगों को पछाड़ दे बल्कि पहलवान वह शख्स है जो गुस्सा के वक़्त अपने नफ़्स पर काबू रखे। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)
- 13) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुसलमान के मुसलमान पर पांच हक़ हैं। सलाम का जवाब देना, मरीज़ की अयादत करना, जनाज़ा के साथ जाना, उसकी दावत क़बूल करना, छींक का जवाब यरहमुकुमुल्लाह कह कर देना। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

तेरहवां बाब: लिबास में कुम्फार व मुशरेकीन से मुशाबहत

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आम तौर पर (यानी लिबास और गैर लिबास में) कुम्फार और मुशरेकीन से मुशाबहत करने से मना फरमाया है, चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान अहादीस की किताबों में मौजूद है जिसने जिस क़ौम की मुशाबहत इख्तियार की वह उनमें से हो जाएगा। (अबू दाउद 4031)

- लिबास में खास तौर से मुशाबहत करने से मना फरमाया गया है हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन अलआस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको खालिस ज़र्द रंग के कपड़ों में मत्स्र देखा तो फरमाया कि यह काफ़िरों का लिबास है इसको न पहनो। (मुस्लिम 2077)

खलीफा सानी हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने आज़रबाइजान के मुसलमानों को पैगाम भेजा कि ऐश परस्ती और मुशरिकों के लिबास से बचो। (मुस्लिम 2609)

चैदहवां बाब: मर्दों और औरतों के लिबास में मुशाबहत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह की लानत हो उन मर्दों पर जो औरतों से (लिबास या कलाम वगैरह में) मुशाबहत करते हैं, इसी तरह लानत हो उन औरतों पर जो मर्दों की (लिबास या कलाम वगैरह में) मुशाबहत करती हैं। (बुखारी)

पन्दरहवां बाब: पैंट व शर्ट और कुर्ता व पाजामा का मुवाज़ना

जैसा कि बयान किया जा चुका है कि लिबास में असल जवाज़ है, इंसान अपने इलाका की आदात व अतवार के मुताबिक चंद शराएत के साथ कोई भी लिबास पहन सकता है, इन शराएत में से यह भी है कि कुम्फार व मुशरेकीन का लिबास न हो। पैंट व शर्ट यक़ीनन मुसलमानों की ईजाद नहीं है, लेकिन अब यह लिबास आम हो गया है, चुनांचे मुस्लिम और गैर मुस्लिम सब इसको इस्तेमाल करते हैं। लिहाज़ा पैंट व शर्ट मुन्दर्जा बाला शराएत के साथ इस्तेमाल करना बिना कराहियत जाएज़ है, अलबत्ता पैंट शर्ट के कुम्बले कुर्ता व पाजामा को चंद असबाब की वजह से फौकियत हासिल है।

1) कुर्ता व पाजामा आम तौर पर सफेद या सफेद जैसे रंगों पर मुशतमिल होता है जबकि पैंट शर्ट आम तौर पर रंगीन होती है। अहादीसे सहीहा की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा मुत्तफिक है कि अल्लाह तआला के हबीब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफेद पोशाक ज़्यादा पसंद फरमाते थे, नीज़ आम तौर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लिबास सफेद ही हुआ करता था।

2) क़यामत तक आने वाले इंसानों के नबी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़मीस बहुत पसंद थी। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़मीस के जो औसाफ अहादीस में मिलते हैं वह शर्ट के बजाए मौजूदा ज़माने के कुर्ते (सौब / क़मीस) में ज़्यादा मौजूद हैं।

3) अगरचे इस वक़्त पैंट शर्ट का लिबास मुस्लिम व गैर मुस्लिम सब में राएज हो चुका है, लेकिन सारी दुनिया तसलीम करती है कि पैंट शर्ट की इब्तिदा मुस्लिम कल्चर की देन नहीं, जबकि कुर्ता

22) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम में से वह शख्स मेरे नज़दीक ज़्यादा महबूब है जो अच्छे अखलाक वाला हो। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

23) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सद्का देने से माल में कमी नहीं आती और जो बन्दा दरगुज़र करता है अल्लाह तआला उसकी इज़ज़त बढ़ाता है और जो बन्दा अल्लाह के लिए आजिज़ी इख्तियार करता है उसका दर्जा बुलंद करता है। (सही मुस्लिम)

24) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर कोई शख्स अपने घर वालों पर खर्च करता है तो वह भी सद्का^१ह यानी उसपर भी अजर मिलेगा। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

25) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ऐ नौजवान की जमाअत! तुम में से जो भी निकाह की इस्तिताअत रखता हो उसे निकाह कर लेना चाहिए, क्योंकि यह नज़र को नीची रखने वाला और शरमगाहों की हिफाज़त करने वाला है और जो कोई निकाह की इस्तिताअत न रखता हो उसे चाहिए कि रोज़े रखे, क्योंकि यह उसके लिए नफसानी खाहिशात में कमी का बाइस होगा। (सही बुखारी)

26) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया औरत से निकाह (आम तौर पर) चार चीज़ों की वजह से किया जाता है। उसके माल की वजह से, उसके खानदान के शर्फ की वजह से उसकी ख़ुबसूरती की वजह से और उसके दीन की वजह से। तुम दीनदार औरत से निकाह करो, अगरचे गर्द आबू हों तुम्हारे हाथ,

आम तौर पर पैंट पाजामा के मुक़ाबले में तंग होती है और जिस्म की साख़्त के हिसाब से बनाई जाती है।

अल्लाह तआला हम सबको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाक सुन्नतों के मुताबिक़ लिबास पहनने वाला बनाए, आमीन।

अमामा अमामा या टोपी पहनना नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत व आदते करीमा

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हर हर अदा एक सच्चे और शैदाई उम्मत की के लिये सिर्फ काबिले इत्तिबा ही नहीं बल्कि मर मिटने के काबिल है, चाहे उस का ताल्लुक इबादत से हो या रोजमर्रा के आदात व अतवार मसलन खाना या लिबास वगैरह से। हर उम्मत की को हत्तल इमकान कोशिश करनी चाहिए कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हर सुन्नत को अपनी ज़िन्दगी में दाखिल करे और जिन सुन्नतों पर अमल करना मुश्किल हो उनको भी अच्छी और मोहब्बत भरी निगाह से देखे और अमल न करने पर अफसोस करे।

उम्मत मुस्लिमा मुत्तफिक है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आम तौर पर अमामा या टोपी का इस्तेमाल फरमाते थे जैसा कि नीचे की अहादीस में उलमा-ए-उम्मत के अक़वाल मौजूद हैं।

अमामा से मुतअल्लिक अहादीस

हज़रत अमर बिन हुरैस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को खुतबा दिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के (सर के) ऊपर काला अमामा था। (मुस्लिम)

बहुत से सहाबा-ए-किराम मसलन हज़रत जाबिर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हुजूर

29) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला बन्दा की मदद करता रहता है जबतक बन्दा अपने भाई की मदद करता रहे। (सही मुस्लिम)

30) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जब अमानतों में खयानत होने लगे तो बस कयामत का इंतज़ार करो (सही बुखारी)

31) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हराम खाने पीने और पहनने वालों की दुआएँ कहां से क़बूल हों। (सही मुस्लिम)

32) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मिसकीन और बेवा औरत की मदद करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

33) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम्हें अपने कमज़ोरों के तुफ़ैल से रिज़क दिया जाता है और तुम्हारी मदद की जाती है। (सही बुखारी)

34) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला ऐसे शख्स पर रहम करे जो बेचते वक़्त, खरीदते वक़्त और तकाज़ा करते वक़्त (क़र्ज़ वगैरह का) फ़ैयाज़ी और वुसअत से काम लेता है। (सही बुखारी)

35) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया खाओ, पीयो, पहनो और सदका करो, लेकिन फुज़ूलखर्ची और तकब्बुर के बेगैर (यानी फुज़ूलखर्ची और तकब्बुर के बेगैर ख़ूब अच्छा खाओ, पीयो, पहनो और सदका करो)। (सही बुखारी)

क्रितरी - यह एक क्रिस्म की मोटी खुरदुरी चादर होती है, सफेद ज़मीन पर सुर्ख धागे के मुस्ततील बने होते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मुहरिम (यानी हज या उमरह का इहराम बांधने वाला मर्द) कुर्ता, अमामा, पाजामा और टोपी नहीं पहन सकता है। (बुखारी व मुस्लिम) मालूम हुआ कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माना में अमामा आम तौर पर पहना जाता था।

गरज़ ये कि हदीस की कोई भी मशहूर किताब दुनिया में ऐसी मौजूद नहीं है, जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमामा का ज़िक्र कई मरतबा वारिद न हुआ हो।

अमामा का साइज़

अमामा के साइज़ के मुतअल्लिक मुख्तलिफ अक़वाल मिलते हैं, अलबत्ता ज़्यादा तहकीकी बात यही है कि अमामा का कोई मुअय्यन साइज़ मसनून नहीं है, फिर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमामा आम तौर पर 5 या 7 गज़ लम्बा हुआ करता था, 12 गज़ तक का सुबूत मिलता है।

अमामा का रंग

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमामा अक्सर सफेद या सियाह हुआ करता था, अलबत्ता कभी कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी दूसरे रंग का भी अमामा इस्तेमाल करते थे। सियाह

अमामा से मुतअल्लिक बाज़ अहादीस मज़मून में उज़र चुकी हैं, जबकि मुस्तदरक हाकिम और तबरानी वगैरह में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सफेद अमामा का तज़क़िरा मौजूद है, नीज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफेद कपड़ों को बहुत पसंद फरमाते थे, बहुत सी अहादीस में इसका तज़क़िरा मौजूद है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कपड़ों में से सफेद को इख्तियार किया करो, क्यूंकि वह तुम्हारे कपड़ों में बेहतरीन कपड़े हैं और सफेद कपड़ों में ही अपने मुर्दे को कफन दिया करो। (तिर्मिज़ी, अबू दाउद, इब्ने माजा, मुसनद अहमद व सही इब्ने हिब्बान)

हज़रत समरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सफेद लिबास पहनो, क्यूंकि वह बहुत पाकीज़ा, बहुत साफ और बहुत अच्छा है और इसी में अपने मुर्दे को कफन दिया करो। (नसई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

अमामा में शिमला लटकाना

शिमला लटकाना मुस्तहब है और सुनने ज़वाएद में से है। शिमला की मिक्कदार के सिलसिला में बाज़ अहादीस से मालूम होता है कि यह 4 अंगुल हो तो बेहतर है।

हज़रत अमर बिन हुरैस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अमामा बांधते तो उसे दोनों

खातमुन्नबिय्यीन व सैयदुल मुरसलीन हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मज़कूरा बाला इरशादात की रौशनी में हम इंशाअल्लाह बड़े बड़े गुनाह खास कर शिर्क, वालिदैन् की नाफरमानी, क़त्ले नफ़स, चुगलखोरी, जादू, सूद, जुल्म व ज़्यादती, वादा खिलाफी, अमानत में ख़यानत, क़ता रहमी, पड़सियों को तकलीफ़ पुंहाना, हराम और मुशतबा चीज़ों का इस्तेमाल, फुज़ूलखर्ची, तकब्बुर, हसद और बुग़ज़ जैसी मुहलिक बुराइयों से अपने आपको महफूज़ रखेंगे जो हमारे मुआशरे में नासूर बन गई हैं और अपने नबी की तालीमात के मुताबिक़ सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की शुम्दी हासिल करने के लिए नेक आमाल करेंगे और अपने अखलाक़ को बेहतर बना कर इस्तिक़्ामत के साथ दुनियावी फ़ानी ज़िन्दगी में ही उखरवी दायमी ज़िन्दगी की तैयारी करने की हर मुमकिन कोशिश करेंगे। अल्लाह तआला हमें फ़साहत व बलागत के पैकर और बेमिसाल अदीबे अरब हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवामिउल कलिम (अक़वाले ज़रीं) को समझ कर पढ़ने वाला, उनके मुताबिक़ अमल करने वाला और उनके क़ीमती पैगामात को दूसरों तक पहुंचाने वाला बनाए, आमीन।

उलमा व फुक्रहा ने लिखा है कि अमामा पहन कर नमाज़ पढ़ने की अगरचे कोई खास फज़ीलत अहादीसे सहीहा में नहीं आई है, लेकिन चूंकि अमामा पहनना नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत व आदते करीमा है और सहाबा-ए-किराम व ताबेईन व तबे ताबेईन भी आम तौर पर अमामा पहना करते थे, नीज़ यह किसी दूसरी क़ौम का लिबास नहीं बल्कि मुसलमानों का शेआर है और इंसानों के लिए ज़ीनत है। लिहाज़ा हमें अमामा उतार कर नमज़ पढ़ने का एहतेमाम नहीं करना चाहिए, बल्कि आम हालात में भी अमामा या टोपी पहननी चाहिए और अमामा या टोपी पहन कर ही नमाज़ अदा करनी चाहिए, अगरचे अमामा या टोपी पहनना वाज़िब या सुन्नते मुअक्कदा नहीं है।

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अमामा का इस्तेमाल करना साबित है जिस पर उम्मत मुस्लिमा मुत्तफ़िक् हैं तो कोई खास फज़ीलत साबित न भी हो तब भी महज़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा-ए-किराम का अमल करना भी उसकी फज़ीलत के लिए काफी है, मसलन सफ़ेद लिबास नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पसंद था, इसलिए सफ़ेद लिबास पहनना अफ़ज़ल होगा, खाह किसी खास फज़ीलत और सवाब की कसरत का सुबूत मिलता हो या न हो।

अमामा को टोपी पर बांधना

हज़रत रुक़ाना रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुना फरमा रहे थे कि हमारे और

मुशरेकीन के दरमियान फ़र्क़ टोपी पर अमामा बांधना है। (तिस्मिी) बाज़ मुहद्दिसीन ने इस हदीस की सनद में आए एक रावी को ज़ईफ़ करार दिया है।

टोपी से मुतअल्लिक़ अहादीस

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़ेद टोपी पहनते थे। (तबरानी) अल्लामा सुयूति ने अलजामिउस सगीर में लिखा है कि इस हदीस की सनद हसन है। अलजामिउस सगीर की शरह लिखने वाले शैख़ अली अज़ीज़ी ने लिखा है कि कि इस हदीस की सनद हसन है। (अस सिराजुल मुनीर लिशरहिल जामिउस सगीर जिल्द 4 पेज 112) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़ेद टोपी पहनते थे। (अलमोज़मुल कुबरा लित तबरानी) इस हदीस की सनद में आए एक रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ेराश हैं, इब्ने हिब्बान ने इनकी तौसीक़ की है नीज़ फरमाया कि बसा औकात गलती करते हैं। (मजमउज़ ज़वाएद जिल्द 2 पेज 124)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मुहरिम (यानी हज या उमरह का इहराम बांधने वाला मर्द) ुर्क़ा, पाजामा और टोपी पहन सकता है। (बुखारी व मुस्लिम) मालूम हुआ कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में टोपी आम तौर पर पहनी जाती थी।

तीन साल तक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चुपके चुपके लोगों को इस्लाम की दावत देते रहे, फिर खुल्लम खुल्ला इस्लाम की दावात देने लगे।

खुल्लम खुल्ला इस्लाम की दावत देने पर मुसलमानों को बहुत ज्यादा सताया जाने लगा, 2 साल तक मुसलमानों को बहुत तकलिफें दी गईं।

मुसलमानों ने तंग आकर मक्का से चले जाने का इरादा किया, चुनांचे 5 नबूवत में सहाबा की एक जमाअत हबशा हिजरत कर गई। 6 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चाचा हमज़ा और उनके तीन दिन बाद हज़रत उमर फारूक मुसलमान हुए। (रज़ियल्लाहु अन्हुमा)

इन दोनों के ईमान लाने से पहले मुसलमान छुप छुप कर नमाज़ पढ़ा करते थे, अब खुल कर नमाज़ पढ़ने लगे।

7 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खिलाफ कुरैश ने आपस में एक अहद नामा लिखा कि कोई शख्स मुसलमानों और हाशमी कबीला के साथ लेन देन और रिश्ता नाता नहीं करेगा, इस जुल्म की वजह से मुसलमान और हाशमी कबीले के लोग तक़रीबन तीन साल तक एक पहाड़ी की खोह में बन्द रहे।

10 नबूवत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा अबू तालिब और उम्मुल मोमेनीन हज़रत खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का इंतिकाल हुआ, आपको बहुत ज्यादा रंज व गम हुआ।

10 नबूवत, चचा अबू तालिब के इंतिकाल के बाद कुफ़ारे मक्का ने खुल कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ देनी शुरू कर दी।

इमाम बुखारी ने अपनी किताब में एक बाब बांधा है "बुस्म सुजूद अलस सौब फी शिद्दतिल हरर" यानी सख्त गर्मी में कपड़े पर सजदा करने का हुकुम जिसमें हज़रत हसन बसरी का कौल ज़िक्र किया है कि गर्मी की शिद्दत की वजह से सहाबा किराम अपनी टोपी और अमामा पर सजदा किया करते थे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एक शहीद वह है जिसका ईमान उमदा हो और दुश्मन से मुलाकात के वक़्त अल्लाह तआला के वादों की तसदीक करते हुए बहादुरी से लड़े और शहीद हो जाए उसका दर्जा इतना बुलंद होगा कि लोग क़यामत के दिन उसकी तरफ अपनी निगाह इस तरह उठाएंगे। यह कह कर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने या हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो हदीस के रावी हैं अपना सर उठाया यहां तक कि सर से छी गिर गई। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने गुलाम नाफे को नंगे सर नमाज़ पढ़ते देखा तो बहुत गुस्सा हुए और कहा कि अल्लाह तआला ज़्यादा मुस्तहिक है कि हम उसके सामने जीनत के साथ हाज़िर हों।

हज़रत ज़ैद बिन जुबैर और हज़रत हिशाम बिन उरवह रहमतुल्लाह अलैहिम फरमाते हैं कि उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (के सर) पर टोपी देखी। (मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सईद रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि उन्होंने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु (के सर) पर सफेद मिस्री टोपी देखी। (मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा)

हज़रत अशअस रहमतुल्लाह अलैह के वालिद फरमाते हैं कि हज़रत मुसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु बैतुल खला से निकले और उन (के सर) पर टोपी थी। (मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा)

(वज़ाहत) हदीस की इस मशहूर किताब "मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा" में बहुत से सहाबा-ए-किराम की टोपीयों का तज़क़िरा किया गया है, इनमें से इख़्तिसार की वजह से मैंने सिर्फ़ तीन सहाबा-ए-भिरकी टोपी का तज़क़िरा यहां किया है।

टोपी से मुतअल्लिक् बाज़ उलमा-ए-उम्मत के अक्वाल

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा-ए-किराम की टोपियों का तज़क़िरा इस मुख़्तसर मज़मून में करना मुआक़िल है लिहाज़ा इन्ही चंद अहादीस पर इक़तिफ़ा करता हूं, अलबत्ता बाज़ उलमा व फ़ुक्हा के अक्वाल का ज़िक्र करना मुनासिब समझता हूं।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा की राय है कि नंगे सर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ तो अदा हो जाएगी मगर ऐसा करना मक़रूह है। फ़िक़ह हनफी की बेशुमार किताबों में यह मसअला मज़ूक़ है। अल्लामा इबनुल क़य्यिम रहमतुल्लाह अलैह ने लिखा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अमामा बांधते थे और उसके नीचे टोपी भी पहनते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अमामा के बेग़ैर भी टोपी

1 हिजरी, मदीना पहुंचकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा-ए-किराम के साथ मिलकर मस्जिदे नबवी तामीर फरमाई, जुहर, असर और इशा की नमाज़ में अब तक फ़र्ज़ रिक़ात की तादाद 2 थी, मदीना पहुंचकर 4 रिक़ात हो गई, मुहाजेरीन सहाबा का अंसार सहाबा के साथ भाई चारा कायम किया गया, मदीना के यहूदियों और आस पास के रहने वाले क़बीलों से अमन और दोस्ती के अहदनामे हुए।

2 हिजरी, नमाज़ के लिए अज़ान दी जाने लगी, काबा (बैतुल्लाह) की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ी जाने लगी।

2 हिजरी, रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए।

3 हिजरी, ज़कात फ़र्ज़ हुई।

4 हिजरी, शराब पीना हराम हुआ।

5 हिजरी, औरतो को परदा करने का हुकुम हुआ।

6 हिजरी, सुलह हुदैबिया हुई, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उमरह की अदाएगी के बेग़ैर मदीना वापस आ गए, उस वक़्त के मशहूर बादशाहों को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की दावत दी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत पर बादशाहों और हुकुमरानों के अलावा अरब के बड़े बड़े क़बीले मुसलमान हुए।

7 हिजरी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमरह की क़ज़ा की, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 6 हिजरी में सुलह हुदैबिया की वजह से उमरह अदा नहीं कर सक थे।

8 हिजरी, मक्का फतह हुआ, खाना काबा को बुतों से पाक व साफ़ किया गया।

से देखना चाहिए और आगे कंधों को ढांकने पर दलालत करने वाली बुखारी व मोअत्ता इमाम मालिक की रिवायत और मोअत्ता की शरह ज़रकानी (व तमहीद), इब्ने अब्दुल बर, बुखारी की शरह फतहुल बारी, ऐसे ही शैखुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया की किताबुल अखयारात और इमाम इब्ने कुदामा की अलमुगनी से तसरीहात व इकतिबासात नकल करके साबित किया है कि कंधे भी अगरचे आज़ाए सतर में से नहीं हैं, इसके बावजूद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक कपड़ा होने की शकल में नंगे कंधों से नमज़ पढ़ने से मना फरमाया है। इसी तरह सर भी अगरचे आज़ाए सतर में से न सही लेकिन आदाबे नमाज़ में से यह भी एक अदब है कि बिला वजह नंगे सर नमाज़ न पढ़ी जाए और इसे ही ज़ीनत का तकाज़ा करार दिया है। इब्तिदाए अहदे इस्लाम को छोड़ कर जब कि कपड़ों की किल्लत थी उसके बाद इस आजिज़ की नज़र से कोई ऐसी रिवायत नहीं गुज़री जिसमें सराहतन मज़ूक हो कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने या सहाबा-ए-किराम ने मस्जिद में और वह भी नमाज़ बाजमाअत में नंगे सर नमाज़ पढ़ी हो, चेजाएफ़ी मामूल बना लिया हो। इस रस्म को जो फैल रही है बन्द करना चाहिए। अगर फैशन की वजह से नंगे सर नमाज़ पढ़ी जाए तो नमाज़ मकरूह होगी। (फतावा उलमाए अहले हदीस, जिल्द 4 पेज 290-291, बहावाला किताब टोपी व पकगड़ी से या नंगे सर नमाज़)

एक दूसरे अहले हदीस आलिम मौलाना मोहम्मद इसमाइल सलफी ने लिखा है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, सहाबा-ए-किराम और अहले इल्म का तरीक वही है जो अब तक मसाजिद में

मुतवारिस है और मामूल बिहा है। कोई मरफू हदीस सही मेरी नज़र से नहीं गुज़री जिससे नंगे सर नमाज़ की आदत का जवाज़ साबित हो, खुसूसन बाजमाअत फराएज़ में बल्कि आदत मुबारक यही थी कि पूरे लिबास से नमाज़ अदा फरमाते थे। सर नंगा रखने की आदत और बिला वजह ऐसा करना अच्छा काम नहीं है। यह काम फैशन के तौर पर रोज़ बरोज़ बढ़ रहा है और यह भी नामुनासिब है। अगर लतीफ हिस से तबीअत महरूम न हो तो नंगे सर नमाज़ वैसे ही मकरूह मालूम होती है। ज़रूरत और इज़तिरार का बाब इससे अलग है। (फतावा उलमाए अहले हदीस, जिल्द 4 पेज 286-289, बहावाला किताब टोपी व पकगड़ी से या नंगे सर नमाज़)

सउदी अरब के तमाम शैख का फतावा भी यही है कि टोपी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत और तमाम मुहद्दिसीन व मुफस्सेरीन व उलमा व सालेहीन का तरीक़ा है, नीज़ टोपी पहनना इंसान की ज़ीनत है और कुरान करीम (सूरह आराफ 31) की रौशनी में नमाज़ में ज़ीनत मत्सूब है, लिहाज़ा हमें टोपी पहन कर ही नमाज़ पढ़नी चाहिए। यह फतावे सउदी अरब के शैख की वेबसाइट पर पढ़े और सुने जा सकते हैं। सउदी अरब की मौजूदा हुकूमत के निज़ाम के तहत किसी भी हुकूमत के दफ्तर में किसी भी सउदी बाशिन्दा का मामला उसी वक़्त क़बूल किया जाता है जबकि वह टोपी और रुमाल के ज़रिये सर ढांककर हुकूमत के दफ्तर में जाए। सउदी अरब के खास और आम का मामूल भी यही है कि वह आम तौर पर सर ढांक कर ही नमाज़ अदा करते हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे मुतहहरात

अज़वाजे मुतहहरात (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों) के मुतअल्लिक अल्लाह तआला अपने पाक कलाम (सूरह अहज़ाब 32) में इरशाद फरमाता है "ऐ नबी की बीवियों तुम आम औरतों की तरह नहीं हो, तुम बुलंद मक़ाम की हामिल हो। तुम्हारी एक गलती पर दो गुना अज़ाब दिया जाएगा। और इसी तरह तुम में से जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की फरमाबरदारी करेगी और नेक काम करेगी हम उसे अज़ (भी) दोहरा देंगे और उसके लिए हमने बेहतरीन रोज़ी तैयार कर रखी है।" जैसा कि सूरह अहज़ाब 30 और 31 में मज़कूर है।

कुरान करीम, रोज़े क़यामत तक के लिए लोगों से मुखातब है "ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए यह हलाल नहीं है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद उनकी अज़वाजे मुतहहरात में से किसी से निकाह करो।" (सूरह अहज़ाब 53) यानी अज़वाजे मुतहहरात (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों) तमाम ईमान वालों के लिए माँ (उम्मुल मोमिनीन) का दर्जा रखती हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चंद निकाह फरमाए। इनमें से सिर्फ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहुअन्हा कुवारी थीं, बाकी सब बेवा या मुतल्लका थीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे पहला निकाह 25 साल की उम्र में हज़रत खदीजा

चीज़ न मिलने की वजह से सुतरा के लिए अपने आगे टोपी का रखना तो पहली बात यह अमल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरे अहम हुकुम को पूरा करने के लिए किया। दूसरी बात इस हदीस में इसका ज़िक्र नहीं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नंगे सर नमाज़ पढ़ी। मुमकिन है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऊंची वाली टोपी जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफर में पहनते थे इसको सुतरा के तौर पर इस्तेमाल किया हो और अमामा या सर से चिपकी हुई टोपी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर पर हो, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो या तीन किस्म की टोपी का तज़क़िरा अहादीस व सीरत व तारीख की किताबों में आता है।

इस हदीस के अलावा इब्ने असाकिर में वारिद एक मक़ूला से भी इस छोटी से जमाअत ने इस्तिदलाल किया है "मसाजिद में नंगे सर आओ और अमामा बांध कर आओ, बेशक अमामा तो मुसलमानों का ताज हैं" लेकिन मुहद्दिसीन ने इस मक़ूला को हदीस नहीं बल्कि मौज़ू व मदघड़त बात शुमार किया है और अगर यह मक़ूला हदीस मान भी लिया जाए तो इसका बुनियादी मक़सद यही है कि हमें मस्जिद में अमामा बांधकर आना चाहिए।

(दूसरा नुक्ता)

बाज़ हज़रात टोपी का इस्तेमाल तो करते हैं, मगर उनकी टोपियां पुरानी, बोसीदा और काफी मैली नज़र आती हैं। हम अपने लिबास व मकान और दूसरी चीज़ों पर अच्छी खासी रक़म खर्च करते हैं, मगर टोपियां पुरानी और बोसीदा ही इस्तेमाल करते हैं। मेरे अज़ीज़ भाई!

सर को ढांकना ज़ीनत है जैसाकि मुफस्सेरीन व मुहद्दीसीन व उलमा ने किताबों में लिखा है और नमाज़ में अल्लाह तआला के हुकुम के मुताबिक ज़ीनत मतलूब है, नीज़ टोपी या अमामा का इस्तेमाल इस्लामी शेआर है, इससे आज भी मुसलमानों की पहचान होती है, लिहाज़ा हमें अच्छी व साफ सुखरी टोपी का ही इस्तेमाल करना चाहिए।

(तीसरा नुक्ता)

नमाज़ के वक़्त अमामा या टोपी पहननी चाहिए, लेकिन अमामा या टोपी पहनना वाज़िब नहीं है, लिहाज़ा अगर किसी शख्स ने अमामा या टोपी के बेग़ैर नमाज़ शुरू कर दी तो नमाज़ पढ़ते हुए उस शख्स पर टोपी या रुमाल वगैरह नहीं रखना चाहिए, क्योंकि इसकी वजह से आम तौर पर नमाज़ी की नमाज़ से तवज्जोह हटती है (चाहे थोड़े वक़्त के लिए ही क्यों न हो) अलबत्ता नमाज़ शुरू करने से पहले उसको अमामा या टोपी पहनने की तरगीब देनी चाहिए।

(खुलासा कलाम)

अमामा या टोपी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है (क्योंकि अहादीस व सीरत व तारीख की किताबों में जहां जहां भी आम ज़िन्दगी के मुतअल्लिक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर पर कपड़े होने या न होने का ज़िक्र आया है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर पर अमामा या टोपी का तज़क़िरा 99 फीसद वारिद हुआ है) सहाबा, ताबेईन, तबे ताबेईन, मुहद्दीसीन, फ़ुक़हा और उलमा-ए-किराम अमामा या टोपी का इस्तेमाल फरमाते

सबसे पहले नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे मुतहहरात का मुख्तसर तआरुफ़

1) "उम्मुल मोमेनीन हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा" नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली बीवी हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दियानत, कमाल और बरकत को देख कर उन्होंने खुद शादी की दरखास्त की थी। निकाह के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र पचीस साल और हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र चालीस साल थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चारों बेटियाँ (ज़ैनब, रुक़ैया, उम्मे कुलसूम और फातिमा) और इब्राहिम के अलावा दो बेटे (कासिम और अब्दुल्लाह) हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ही से पैदा हुए। हज़रत फातिमा के अलावा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सारी औलाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ही इंतिकाल फरमा गई थी। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इंतिकाल के 6 माहिने बाद हो गया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली बीवी हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिकाल के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 50 साल थी। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल नबूवत के दसवीं साल हुआ, उस वक़्त हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र 65 साल थी। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की सच्चाई और गमगुसारी को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी वफात के बाद भी हमेशा याद फरमाते थे।

देखा। न सिर्फ़ खास बल्कि सउदी अरब की अवाम भी आम तौर पर सर ढांक ही नमाज़ अदा करती है।

(वज़ाहत)

यह मज़मून सिर्फ़ मर्द हज़रात के सर ढांकने के खुसुअल्लिक़ लिखा गया है, रहा औरतों के सर ढांकने का मसअला तो उम्मतु मुस्लिमा मुत्तफ़िक़ है कि औरतों के लिए सर ढांकना ज़रूरी है, इसके बेग़ैर उनकी नमाज़ ही अदा नहीं होगी।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखी नाकाबिले बर्दाश्त

हिन्दु महासभा के लीडर के जरिया सैयदुल बशर व नबियों के सरदार हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खिलाफ गुस्ताखाना कलेमात कहे जाने पर उसको जुर्म के कठहरे में खड़ा करके उसके खिलाफ कार्यवाही की जानी चाहिए, क्योंकि मुसलमान हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखी को बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं और इस तरह के वाक्यात से मुल्क में अमन व अमान के बजाये अफरातफरी, अदमे रवादारी और अदमे तहम्मुल में इजाफा होगा, जिससे मुल्क में तरक्की के बजाये अदमे इस्तिहकाम पैदा होगा, लोगों में नफरत और अदावत पैदा होगी।

पूरी दुनिया के अरबाब इल्म व दानिश का मौक़िफ है कि किसी शख्स की तौहीन व तहकीर का राय की आजादी से कोई तअल्लुक नहीं है, क्योंकि तकरीबन हर मुल्क में शहरियों को यह हक हासिल है कि वह अपनी हितक इज्जत की सूरत में अदालत से रूज़क़रें और हितक इज्जत करने वालों को कानून के मुताबिक सजा दिलवायें। सवाल यह है कि किसी शख्स की हितक इज्जत करने वाले को कानूनन मुजरिम तसलीम किया जाता है, तो मजाहिब के पेशवाओं और खास तौर पर अंबिया-ए-कराम के लिए यह हक क्यों तसलीम नहीं किया जा रहा है और मजहबी रहनुमाओं की तौहीन व तहकीर को राय की आजादी कह कर जराएम की फेहरिस्त से निकाल कर हुक्क की फेहरिस्त में कैसे शामिल किया जा रहा है? यह आजादी राय नहीं बल्कि सिर्फ और सिर्फ इस्लाम, ख़लिफ तंजीमों और हुक्मतों की इतिहा पसंदी और फिक्री दहशतगदी है।

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 55 साल थी। जैसे बाप ने इस्लाम की बड़ी बड़ी खिदमात अंजाम दी थीं बेटी भी ऐसी ही आलिमा व फाज़िला हुई कि बड़े बड़े सहाबा-ए-किराम उनसे मसाइल पूछा करते थे। 2210 अहादीस की रिवायत उनसे है। हज़रत अबू हु़रैरा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद सबसे ज़्यादा अहादीस हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से ही मरवी है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिर्फ हज़रत आइशा ही कुंवारी बीवी थीं बाकी सब बेवा या मुतल्लका थीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत आइशा से बहुत ज़्यादा मोहब्बत करते थे। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हुजरा में ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात हुई और इसी में मदफून हैं। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का 57 या 58 हिजरी में इंतिकाल हुआ।

4) "उम्मुल मोमेनीन हज़रत हफसा रज़ियल्लाहु अन्हा" दूसरे खलीफा हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हैं। उन्होंने अपने पहले शौहर के साथ हबशा और फिर मदीना की तरफ हिजरत की थी। उनके शौहर जंगे उहद में ज़ख्मी हो गए थे और ज़ख्मों से मर न लाकर इंतिकाल फरमा गए थे। इस तरह हज़रत हफसा रज़ियल्लाहु अन्हा बेवा हो गईं तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे 3 हिजरी में निकाह फरमा लिया। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 56 साल की थी। हज़रत हफसा रज़ियल्लाहु अन्हा बहुत ज़्यादा इबादत गुज़ार थीं। हज़रत हफसा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल 41 या 45 हिजरी में हुआ।

किया जायगा। अल्लामा इबने तैमिया ने 3 जिल्दों पर मुशतमिल अपनी किताब में इस मौजू पर कुरान व हदीस के दलाएल की रौशनी में तफसीली बहस की है। गिलाफे काबा से लिपटे हुए तौहीने रिसालत के मुरतकिब को कतल करने का हुक्म हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिया। हजरत अनस रजी अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि फतहे मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में तशरीफ फरमा थे। किसी ने अर्ज किया (आपकी शान में तौहीन करने वाला) इबने खत्तल काबा के परदे से लिपटा हुआ है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया उसे कतल कर दो। (सही बुखारी) यह अब्दुल बिन खत्तल मुरतद था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिज्र में शेर कह कर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में तौहीन करता था। उसने दो गाने वाली लौंडियाँ इसलिए रखी हुई थी कि वह हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिज्र में अशआर गाया करें। जब हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके कतल का हुक्म दिया तो उसे गिलाफे काबा से बाहर निकाल कर बांधा गया और मस्जिदे हराम में मकामे इब्राहिम और जमजम के कुव्वे के दरमयान उसकी गरदन उड़ा दी गई। (फतहूल बारी) उस दिन एक साअत के लिए हरमे मक्का को हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हलाल करार दिया गया था। मस्जिदे हराम में मकामे इब्राहिम और जमजम के कुव्वे के दरमयान यानी बैतुल्लाह से सिर्फ चंद मीटर के फासला पर उसको कतल किया जाना इस बात की दलील है कि गुस्ताखे रसूल बाकी मुरतदीन से बदरे जहां बदतर बद हाल है।

पूरी इंसानियत को यह भी अच्छी तरह मालूम होना चाहिए कि हर मुसलमान के दिल में हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहब्बत दुनिया की हर चीज से ज्यादा है क्योंकि शरीअते इस्लामिया की तालिमात के मुताबिक हर मुसलमान का हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी सुन्नतों से मोहब्बत करना लाजिम और जरूरी है। नीज हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी में ऐसी औसाफे हमीदा बयक वक्त मौजूद थीं जो आज तक न किसी इंसान की जिन्दगी में मौजूद रही हैं और न ही उन औसाफे हमीदा से मुत्तसिफ कोई शख्स इस दुनिया में आयेगा। आपकी चंद सिफात यह हैं।

इज्ज व इंकिसारी, अफव दर गुजर, हमसार्यों का खयाल, लोगों की खिदमत, बच्चों पर शफकत, औरतों का इहतिराम, जानवरों पर रहम, अदल व इंसाफ, गुलाम और यतीम का खयाल, शुजाअत व बहादुरी, इस्तिकामत, जुहद व किनाअत, सफाई मामलात, सलाम में पहल, सखावत व फैयाजी, मेहमान नवाजी।

हजरत अनस रजी अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुममें से कोई उस वक्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसको अपने बच्चों, अपने मां बाप और सब लोगों से ज्यादा महबूब न हो जाऊं। (सही मुस्लिम व बुखारी) एक मरतबा हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत उमर रजी अल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़े हुए थे। हजरत उमर रजी अल्लाहु अन्हु ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! आप मुझे हर चीज से ज्यादा अजीज हैं सिवाए मेरी अपनी जान के। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया नहीं, उस जात

सलमा की उम्र 65 साल थी। 58 या 61 हिजरी में हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल हो गया। उम्महातुल मोमेनीन में सबसे आखिर में इन्हीं का इंतिकाल हुआ।

गरज़ ये कि हज़रत हफसा, हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुन के शौहर जंगे उहद (3 हिजरी) में शहीद हुए, या जख्मों की ताब न लाकर इंतिकाल फरमा गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन बेवा औरतों से इनके लिए दुनियावी सहारे के तौर पर निकाह फरमा लिया।

7) “उम्मुल मोमेनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश” यह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सगी फूफीज़ाद बहन थीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनका निकाह कोशिश करके अपने मुंह बोले बेटे (आज़ाद करदा गुलाम) हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु से करा दिया था। लेकिन शौहर की हज़रत ज़ैनब के साथ नहीं बनी और बीवी को छोड़ दिया। अगरचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को बहुत समझाया, मगर दोनों का मिलाप नहीं हो सका। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की इस मुसीबत का बदला अल्लाह ने यह दिया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ उनका निकाह 5 हिजरी में हो गया, यमि उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 58 साल थी। ज़मानए जाहिलियत में मुंह बोले बेटे को हकीकी बेटे की तरह समझ कर उसकी तलाक़ शुदा या बेवा औरत से निकाह करना जाएज़ नहीं समझते थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु की मुतल्लका औरत से निकाह करके उम्मते

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भूक की शिद्दत की वजह से अपने पेट पर दो पत्थर बांधे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में दो दो महीने तक चुल्हा नहीं जला। आप सल्लल्लाहु अलैहि के ऊपर पत्थर की चट्टान गिरा कर मारने की कोशिश की गई। हजरत फातिमा रजी अल्लाहु अन्हा के सिवा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सारी औलाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने वफात हुई। गर्जकि सैयुद्द अम्बिया व सैयदुल बशर को मुख्तलिफ तरीकों से सताया गया मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी सबर का दामन नहीं छोड़ा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रिसालत की अहम जिम्मेदारी को इस्तिकामत के साथ बहुसन खुबी अंजाम देते रहे, हमें इन वाक्यात से यह सबक लेना चाहिए कि धरैलू या मूल्की या आलमी सतह पर जैसे भी हालात हमारे ऊपर आयें हम उनपर सबर करें और अपने नबी के नकशे कदम पर चलते हुए अल्लाह से अपना तअल्लुक मजबूत करें।

लेखक का परिचय

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी का तअल्लुक सम्भल (यूपी) के इल्मी घराने से है, उनके दादा मशहूर मुहद्दिस, मुक़र्रिर और स्वतंत्रता सेनानी मौलाना मोहम्मद इसमाईल सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ़ मदरसों में तकरीबन 17 साल बुखारी शरीफ का दर्स दिया, जबकि उनके नाना मुफ्ती मुशर्रफ हुसैन सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ़ मदरसों में इफता की ज़िम्मेदारी निभाने के साथ साथ बुखारी व हदीस की दूसरी किताबें भी पढ़ाईं।

डाक्टर नजीब कासमी ने इब्तिदाई तालीम सम्भल में ही हासिलकी, चुनांचे मिडिल स्कूल पास करने के बाद अरबी तालीम का आगाज़ किया। इसी बीच 1986 में यूपी बोर्ड से हाई स्कूल भी पास किया। 1989 में दारुल उलूम देवबन्द में दाखिला लिया। दारुल उलूम देवबन्द के क़याम के दौरान यूपी बोर्ड से इन्टरमीडिएट का इमतिहान पास किया। 1994 में दारुल उलूम देवबन्द से फरागत हासिल की। दारुल उलूम देवबन्द से फरागत के बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली से B.A (Arabic) और तरजुमे के दो कोर्स किए, उसके बाद दिल्ली यूनिवर्सिटी से M.A. (Arabic) किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली के अरबी विभाग की जानिब से मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी को "अल जवानिबुल अदबिया वल बलागिया वल जमालिया फिल हदीसिन नबवी" यानी हदीस के अदबी व बलागी व जमाली पहलू पर दिसम्बर 2014 में **डाक्टरेट की डिग्री** से सम्मानित किया गया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने प्रोफेसर डाक्टर शफीक अहमद खां नदवी भूतपूर्व सदर अरबी विभाग और प्रोफेसर रफीउल इमाद फायनान की अंतर्गत में

बचा दिया। नीज़ हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ निकाह करने की वजह से क़बीला बनू मुस्तलक की एक बड़ी जमाअत ने क़बूल कर लिया। (याद रखें कि इस्लाम ने ही अरबों में ज़माने जाहिलियत से जारी इंसानों को गुलाम व लौंडी बनाने का रिवाज रफ़ता रफ़ता ख़त्म किया है) हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल 50 हिजरी में हुआ।

9) "उम्मुल मोमेनीन हज़रत सफ़िया बिन्ते हैय बिन अख़तब रज़ियल्लाहु अन्हा" इनका तअल्लुक यहूदियों के क़बीला बनू नज़ीर से है। हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं। इनके बाप, भाई और इनके शौहर को जंग में क़त्ल कर दिया गया था। यह कैद हो कर आईं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको इख़्तियार दिया कि चाहें इस्लाम ले आएँ या अपने मज़हब पर क़सी रहें। अगर इस्लाम लाती हैं तो मैं निकाह करने के लिए तैय़ार वरना इनको आज़ाद कर दिया जाएगा, ताकि अपने खानदान के साथ जा मिलें। हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा अपने खानदान के लोगों में वापसी के बजाए इस्लाम क़बूल करके नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकाह करने के लिए तैय़ार हो गईं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको आज़ाद कर दिया, फिर 7 हिजरी में इनसे निकाह कर लिया, निकाह के वक़्त नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 60 साल थी। हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल 50 हिजरी में हुआ।

AUTHOR'S BOOKS



IN URDU LANGUAGE:

حج مبرور، مختصر حج مبرور، ہی اہل الصلاۃ، عمرہ کا طریقہ، حقیر رمضان، مطلوبات قرآن، اسلامی مضامین جلد ۱،
اسلامی مضامین جلد ۲، قرآن و حدیث: شریعت کے دو اہم ماخذ، سیرت النبی صلی اللہ علیہ وسلم کے چند پہلو،
زکوٰۃ و صدقات کے مسائل، فیملی مسائل، حقوق انسان اور معاملات، تاریخ کی چند اہم شخصیات، علم و ذکر

IN ENGLISH LANGUAGE:

Quran & Hadith - Main Sources of Islamic Ideology
Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi
Come to Prayer, Come to Success
Ramadan - A Gift from the Creator
Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat
A Concise Hajj Guide
Hajj & Umrah Guide
How to perform Umrah?
Family Affairs in the Light of Quran & Hadith
Rights of People & their Dealings
Important Persons & Places in the History
An Anthology of Reformative Essays
Knowledge and Remembrance

IN HINDI LANGUAGE:

کوران اور ہدیث - اسلامی آئیڈیالوجی کے مین سورس
سیرتوں نبی کے مختلف پہلو
نماز کے لیے آؤ، سफलता کے لیے آؤ
رمضان - اللہ کا ایک उपहार
ज़कात और सदाकात के बारे में गाइडेंस
हज और उमराह गाइड
मुख्तसर हजजे मबरूर
उमराह का तरीका
पारिवारिक मामले कुरान और हदीस की रोशनी में
लोगों के अधिकार और उनके मामलात
महत्वपूर्ण व्यक्ति और स्थान
सुधारात्मक निबंध का एक संकलन
इल्म और जिक्र



First Islamic Mobile Apps of the world in 3 languages
(Urdu, Eng. & Hindi) in iPhone & Android by Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

DEEN-E-ISLAM

HAIJ-E-MABROOR